



० श्री धानगादादस ०

श्री आत्महितोपदेश विविध संग्रह

भाग पहिला ।

संस्करण—

धर्मशास्त्रा गुरुवर्ग भूमिगत मठिया,
माहला मगधिया बी गुवाड
बीकानर (राजपूताना) ।

BHAIRO DAN SETHIA,
Mohalla Mirrollan,
BIKANER (Rajputana)

प्रथमा गुणित

म० १६३३

सन् १६२०

१००० प्रतिया ।



अनुक्रमणिका ।



	४४
(१) मंगलीक दोहा शामनपति श्री पीर निन त्रिभुवन दीपक आण	१
(२) पात्र सम्यक्ता भेद	३
(३) नव प्रकारे सम्यक्ता ना भेद	७
(४) चार सम्यक्ता ना ११ द्वार	२०-२१
(५) सात सम्यक्ता ना ग्याह द्वार	२२-२३
(६) उदय विचार	२४
(७) परमाधाभियों के कार्य	२५
(८) श्री ज्ञान बहानरी	२६
(९) अध ६ भावना	४१
(१०) आत्म निन्दा	४२
(११) आत्मनिन्दा का दोहा	४८
(१२) शिवा का बीम बोल	४९
(१३) बारह भावना	५१
(१४) भावना का हरिगीत छंद	५८
(१५) अष्ट कर्म के बन्धन	५९
(१६) प्रहस्म्यादि विचार (पारमी-गाथा)	६४

(१७) दारमा नाथो	६
(१८) वर्तमान चौराही के तीर्थों के कारण	६७
(१९) मिथ्या का २५ बात	७०
(२०) रात्रि तथा दिन की भाग्यता	७१
(२१) दोहा	७६
(२२) टांग मागारी मयारे का	७९
(२३) भाग्य व चार मयारे	८३
(२४) मगनुभाय उन्हा	८७
(२५) नमोधि मगनु यलों की २० भागना	८८
(२६) श्री पद्मावती की टांग	८९
(२७) मायरा	९०३
(२८) आत्मगिदा उन्हा	९०४
(२९) आत्म गिदा मगनु का शुभ	९०६
(३०) गुरु चेला का मगनु	९१०
(३१) श्री गुरु रात्रि	९१३
(३२) काग पर्यामी	९१४
(३३) उपदगा २८ रुग	९१७
(३४) मयरा	९२१
(३५) पद्मावती की सगुना	९२७
(३६) मगनु	९२८
(३७) नदानी न। टांग	९२९
(३८) आत्मगिदा का मगनु	९३०



पृष्ठ	नाम द्वार	चायक	उपशम	द्योप- सम	उदर
२१	मथतर द्वार	आतगे नदी	जवन आर मुहल उठ हा देशउणा अथ पुहल परावतेन	उपमम माफक	उपमम माफक
२२	अनरद्वार	चायक में आतरो नदी	उपमम रो आतगे ज० अ० सु उ- हृष्टो आ- तरो पदे तो देश उणा अथ पुहल परावतेन	उपमम माफक	उपमम माफक

२३ चायकरी म्विति ज० उ० एक समय, बाँ चायक
कमे

चायकरी रुद्ध चायकरी वर ?

२३ नि-यागी म्विति श्रीन मांग जवन
अनर मुहल उठगी देशउणी अथ
पुहल आतग पदे तो जवन अनर
मुहल उठहा ६६ मागर भाभग

पृष्ठ	अष्ट	शुद्ध	वर्ति
२३	वनेग	कनेण	३
२३	जुवाला	मनाप (धर)	८

क्र.	शब्द	शब्द	पंक्ति.
८	परमाग	परमाग.	८
९	विम ग विम	विम ग विम	९
१०	विम	विम	१०
११	विम	विम	११
१२	विम	विम	१२
१३	विम	विम	१३
१४	विम	विम	१४
१५	विम	विम	१५
१६	विम	विम	१६
१७	विम	विम	१७
१८	विम	विम	१८
१९	विम	विम	१९
२०	विम	विम	२०
२१	विम	विम	२१
२२	विम	विम	२२
२३	विम	विम	२३
२४	विम	विम	२४
२५	विम	विम	२५
२६	विम	विम	२६
२७	विम	विम	२७
२८	विम	विम	२८
२९	विम	विम	२९
३०	विम	विम	३०
३१	विम	विम	३१
३२	विम	विम	३२
३३	विम	विम	३३
३४	विम	विम	३४
३५	विम	विम	३५
३६	विम	विम	३६
३७	विम	विम	३७
३८	विम	विम	३८
३९	विम	विम	३९
४०	विम	विम	४०
४१	विम	विम	४१
४२	विम	विम	४२
४३	विम	विम	४३
४४	विम	विम	४४
४५	विम	विम	४५
४६	विम	विम	४६
४७	विम	विम	४७
४८	विम	विम	४८
४९	विम	विम	४९
५०	विम	विम	५०
५१	विम	विम	५१
५२	विम	विम	५२
५३	विम	विम	५३
५४	विम	विम	५४
५५	विम	विम	५५
५६	विम	विम	५६
५७	विम	विम	५७
५८	विम	विम	५८
५९	विम	विम	५९
६०	विम	विम	६०
६१	विम	विम	६१
६२	विम	विम	६२
६३	विम	विम	६३
६४	विम	विम	६४
६५	विम	विम	६५
६६	विम	विम	६६
६७	विम	विम	६७
६८	विम	विम	६८
६९	विम	विम	६९
७०	विम	विम	७०
७१	विम	विम	७१
७२	विम	विम	७२
७३	विम	विम	७३
७४	विम	विम	७४
७५	विम	विम	७५
७६	विम	विम	७६
७७	विम	विम	७७
७८	विम	विम	७८
७९	विम	विम	७९
८०	विम	विम	८०
८१	विम	विम	८१
८२	विम	विम	८२
८३	विम	विम	८३
८४	विम	विम	८४
८५	विम	विम	८५
८६	विम	विम	८६
८७	विम	विम	८७
८८	विम	विम	८८
८९	विम	विम	८९
९०	विम	विम	९०
९१	विम	विम	९१
९२	विम	विम	९२
९३	विम	विम	९३
९४	विम	विम	९४
९५	विम	विम	९५
९६	विम	विम	९६
९७	विम	विम	९७
९८	विम	विम	९८
९९	विम	विम	९९
१००	विम	विम	१००

पृष्ठ	अध्याय	शुद्ध	पानि
१०७	रवा	(राग्या)	११
१०८	कुङ्क कपट मेनो त्यागने	कुङ्क कपट (मेनो) त्यागने	१
१०८	इमडा	घणा	२
१०८	देगो	देगा	६
१०८	नय नया	नेया नेया	८
१०८	गितरेजी	चिनरोपी	१३
१०९	कादिमो	कारिमो	१४
११०	निग	निद्रा	१०
१११	कराध	करोध,	६
१११	बादल	बादल,	१८
११२	गुग्गुलु	गुग्गु,	५
११२	पग्निप्रद	पग्निप्रद,	१०
११३	दाइ	दोष	८
११३	रणी	रेण	१४
११४	गन घटे	गन घट (घटये)	१
११४	फामक	फामुर	४
११४	गितरे	गितरे	५
११४	वाणन	वाण	७
११५	न	न	८
११५	कल	कम	१७
११५	गिण	गिण	१८
११६	रवको	रवको,	६

पृष्ठ	अनुद्ध	शुद्ध	पथित
१००	नारी	नारी	१०
१००	जावनी.	जावनी.	२१
१०१	बहु	छद्	२३
१००	पाठ	पाठ	१७
१००	मील	लील	२३
१०५	पाठयो	पदयो	१
१०५	अप्र नाग्यानी	अप्रत्याख्यान	७
१०५	मोर्	मोरी	१२
१०५	चिनी	प्रति	१३
१२७	दियो	दंड	३
१०७	भाषणो	भाषणी	३
१०७	सामलो,	ममान लो	७
१०६	एकन	एकलदत्त	७
१३०	सबलो	सबलो	८
१३०	विम	हु विम	८
१३०	सपट	हु सपटी	८
१३०	विखतु	निदामु	१३
१३०	राब	आप	
१३०	गाररा	गारगे	००
१३१	हृत्	हृत् (हृत्)	१
१३१	बहुजी	बहुजी	४
१३१	दिस	वि	१३
१३३	धु	धु	२

१३

१४

१५

१६

१	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

१७

१८

१९

२०

१	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----





ॐ दोहा ॐ

केवल ज्ञानी का सदा, यहु पेशर जेड़ ।
 गुरु गुरमे धारण करो, अपनी जिह का छोड़ ॥१॥

जिन वचन तामेध सच, समभाव नहिं नाण ।
 जतनासु बाधो मही, छट प्रभु की बाण ॥ २ ॥





टोहा ॥

शमनपति श्री वीर जिन त्रिमुखन दीपक जाय ।
 भयदधी तारण तरण बाह्य सम भगवान ॥१॥
 चरण कमल युगमेहना, पदे इन्दुर्दीनेन्द ।
 चन्द्र मरन्द फनीन्द तसु मेघे सुरनर वृन्द ॥२॥
 तसु कृपा मे उद्धरया जीय अश्व सुशान ।
 लही शीव पद भय उद्धधि नरि अजर अमर सुखधान ॥३॥
 तसु सुरधी पाणी खरि जिम आरण परमान ।
 अनन्त नपात्म ज्ञानधी भविजन दु ग मिटान ॥४॥
 ते पाणी सदगुग मुखे जे भवि हृदय धरन् ।
 स्वपर भेद विज्ञान रम अनुभव ज्ञान लहन् ॥५॥
 उत्तम मर भय पापकर गृह मानघी पाय ।
 जो न मुखे निन वचन रम अफल उमारो जाय ॥६॥
 ते माटे भवि जीवक अयग उद्दिन पान ।
 जिनपाणी प्रथम ही अरण अनुक्रम ज्ञान समाज ॥७॥
 निनपाणी के अरण विन गृह सम्यक् न होय ।
 सम्यक् दिन आत्म दरश पारिथ गुण नहि होय ॥८॥
 गृह सम्यक् साधन विना करणी फल गृह पद ।
 सम्यक् रत्न साधन धकी मिटे निमित्त कविप ॥९॥
 समक्षि भेद निन वचन मे नद पराय दिगेय ।
 निन मुखे जोय प्रकाश है जानो भेद अनेक ॥१०॥

निश्चय अत्र व्यवहार नय ॥ दोनु परिमाण ।
 दधि मधे, दूध फाट्या ने तो न्याय पिटाण ॥११॥
 देव धर्म गुरु आत्मा तजे कुंठर कुंठम ।
 ॥ व्यवहार सम्यक्त्वन कर्त्तव्य धर्म तो मर्म ॥१२॥
 निश्चय सन्यक्त नो मनी कारण छे व्यवहार ।
 ॥ समक्ति प्रारायना निश्चय पण व्यवहार ॥१३॥
 निश्चय सम्यक् जीवने पर परिणति रस त्याग ।
 निज स्वभाव म रमणता गियसुखतो ॥ गग ॥१४॥
 पैटु नम्यक्त तदलहे समझे नय तत्त्व ज्ञात ।
 नय निक्षेप परमाण सु स्याव याद परिमाण ॥१५॥
 द्रव्य छेछ इणही तणा काल भाव विशान ।
 सामान्य विशेष समझने होय नयान्नरु शान ॥१६॥
 अरप जिा चौविममा परणसु पठ अरपिंद ।
 यग पचम काल मे वासन जम सुख कद ॥१७॥
 जिने पापिना स्वादो मग करजो कोई शान ।
 स्वाद वाद नय शुद्ध करो ये म्हारी अरजाम ॥१८॥

शब्दाय वाहण [जहान] चरणरुमल [पग] युग
 [दोष] दीनद [दूरत] तरन्द [गता] फनीन्द [नागकुमार
 वन] वृन्द [वदूत] उद्धरया [निम्नार क्रिया] शिखपद [मुक्ति]
 भव उगधि [मनार समुद्र] नयामक [माताययुक्त आम
 का मे मरा हुड] विज्ञान [जानपना] लहत [लिया] दररा
 [दरसना] तिमर [अव्यक्त] मरिषध [मय दुःख] मर्म
 [मार्ग] आराधना [माधना] अवधार [जानना] परपरिणति
 [परम्परा] नदने [साने लवणाम]

अथ प्रथम पाथ सम्पत्तना भेद लिख्यते ।

उपशमिर, आरम्भते स्थिति ॥ १ ॥ माम्बागान
नवरात्रि स्थिति ॥ २ ॥ प्रायाणाभिक, सागर ६६
माधिक ॥ ३ ॥ देवक एक मनस ॥ ४ ॥ दायिक माधिक
मागर ३३, मना माहं रहे, पछे मिद्ध थाय, ते छते पहला
पार मम्यत्र माहि सपय पणित जायरा, छहेलो माहि
अरजवणित जायरा ।

द्विज नम्यवन पादवानि विधी लिख्यते ।

प्रथम उपशम मम्यत्र ते किन पाने, चिणे जीव प्रथम
कने मम्यत्र तापो नहीं, क पीवन वर्तवार अकामनिनराए
करी, आउपा टाती, मान रुमनी स्थिति, एक रौंडा कोडी
सागरोपम, माहे धर्मे छाने तेवली पार पीव चाख मन परि
क्षामे करी मिध्यान्व वम्म पुट्टलना अपादि, रिपुज करे,
न माही पहलो पुन, अतरमर्तु माहे भोगरी आन प्रमेगर्था
अलगा वय वरी दाना ज पुन उर्य नहीं छ ते उपशमापे
(मम्म टाप्ति अतिनी पर) अतर माहोर्ने उर्य आरश,
उर्ने विगले वर्ततो जीव अनाग्रत अग्रन्था लवी, द्विज ए
मम्यत्र आवे नो कनली पार जीवने आव ते रहे ।

उक्तं एव पीवने मनार माह आवे तो पार दार
आर रगता न आव, द्विज मम्यवन केतने मुख टाले

होने, ते कहे छे, चौथे गुणठाखा थी माढी इग्यारमा गुण
ठाखा ताई होने ॥ १ ॥

उपशम सम्यक्त लहे, सम्यक्तनी रोषक सात प्रकृती
छे अनन्तानु वर्षीया कपाय ४ दर्शन मोहनी २ ए सात
उदयागत सपावे अनुदयागत नै उपसमावे ।

बीनो सम्यक्त कहे छे, उपशम सम्यक्त माहे वर्तता
 थका जे प्रथम मिथ्यात्वनो, बीनो पुजरी धो छे, (पुन) दगला
 तेह नावली, तीन पुन कीने, ते माहि प्रथम अत्युज्वल १,
 (अ-पुज्वल) अनिस्वच्छ बीनो अर्द्ध उज्वल २, तीन्ना
 मलिनदे, उज्वलते सम्यक्त मोहनी १, अर्द्ध उज्वलते मिथ
 मोहनी २, मलिन ते मिथ्यात्व मोहनी ३, ते माहेपी मलिन
 पुजउदय आवे, तिवारे प्रथम उपशम सम्यक्त ने छेहले एक
 समय याकते, अथवा पढारली याकते, फिरी अनता
 नुवधीया कषायनी उदय होवे, तेतली धार डोहलुयको
 बीनो सास्वदान सम्यक्त कहिये, जिम कोइ स्तार, खांड
 घृत त्रिभिने तेमता निण तहना स्वात्माने, तिमन उपशम
 सम्यक्तवमता अनतानुवधीया कषाय ने उदय घये छे
 एक समय अथवा छ आवली सम्यक्तनो स्वाद दवे,
 तेमपी, सास्वदान सम्यक्त कहिये, पढेरली मिथ्यात्व
 अनुमरे, ए सम्यक्त ममार माहे ममता थका जीव ने
 अनुमवे तो उत्कृष्टो पांनसार पाम, अधिको न पामे,
 गुलदासो बीनो हवे ॥ १ ॥

द्विचे चायोपशम सम्यक्त्व कहे छे ।

पाछलि जे मिथ्यात्वना तीन पुज कया, ते भदे उच्चल पुद्गल पुन, जे सम्यक्त्व मोहनीय कर्म्म, जेतीवार जावने उदय आवे, तेतलीवार तीजी चायोपशम सम्यक्त्व कहीये, ए सम्यक्त्व ने विषे दर्शन सप्तक जे पूठलि कया तेना विपाकयी उदय नयी, पिण्य प्रदेगयी, अनुभव छे, ए सम्यक्त्व एक जीव ने ससार माहे भमता थर्का आवे तो अमर्यादी वार आवे, चाँया गुणठाया थी माही सातमा गुणठाया तार्ई होवे ॥ २ ॥

द्विचे वैदक सम्यक्त्व लिख्यते ।

पाछलि तीन पुज कया, ते मिथ्यात्वना, तेमाहे उच्चल पुद्गल पुन जे सम्यक्त्व मोहनीयो, ते पिण्य चायक भावे आवे तियारे खपावे, ते खपावता, २ छेहला समय याकते तिवारे वैदक सम्यक्त्व कहीये, काह एक सम्यक्त्व मोहनीयना पुद्गल वेदे छे, पिण्य सर्व वेदे तो नहीं, ते माटे सम्यक्त्व जीव ने आवे तो एकवार आवे चठया गुणठाया थी मातमा तार्ई होवे ॥ ३ ॥

द्विचे चायिक सम्यक्त्व कहे छे ।

ए दर्शन सप्तक जे पाछलि कया ते सबया घय होवे, तिवारे चायिक सम्यक्त्व होवे, ए सम्यक्त्व चौदा गुणठाया थी माही चवत्तमा तार्ई होवे, अने गुणठाया

अतीत न पण डार, चायिह मायनी आदि छ पिण
 भा न थी त माट एक जार जीव न भाव, डि ए
 सम्पत्त गांठ मय धायिक सम्पत्ता अरुपी छ त्थान मरु
 न पुद्ग सम्पत्ताना आ-द्धक तठनो मरया वय यपा उ
 निगण छ कया तीव स्वभाव छे, त माट रीजा शा
 सम्पत्ता कयिह मा तान्ता दशन मत्तनो मरया वय
 दुमा तडी नीणह करि मायणि छे निर्मल तीव स्वभाव
 प्रगया नरी, त माट अरुपी न कहीय, तिमयली रूपी पिण
 न कहीय, रूप न पुद्गल धम्म छ, अन ए चतन धम्म छ,
 पिण पुद्गल मिश्रित अयुद्ध माणै छ, त माट ज मयेया रूपि
 नरा, तिम मरदा अरुपी पिण नरा, तहन कयचिन् रूपी
 कयचिन् अरुपी पिण कहीय ।

॥ इति पाच सम्पत्त रिवाज सम्पूयम् ॥



विषे साम्बत नद प्रसारे-नेहना नाम ।



१ द्रव्य साम्बत न श्री गीर्वाण दृष्टिग दाना
उपर परतीति ध्याये, तदन धरी मान, मुक्ता पकटाया
सम्बत निम मुद लट निमदिज वर पिय भलायद अर
नही ३ द्रव्य लम्बाउ वटीये ॥ १ ॥

२ दीग भाव साम्बत न आगीतानी दरेद्रिम
आगीगा में एउ प्रगट दीगे, निम भगानुम मदिन पम्माई
जाय, तदने भाव साम्बत वटीये ॥ २ ॥

३ तिथय साम्बत न दव पुरधन वा पुदा क
विषे असायवंग हाव, अने धारा दान तागिय ने विषे मुद
दगिदास प्रवने न तिथय साम्बत वटीये ॥ ३ ॥

४ असाय साम्बत न समताना वा धीन होय
मना ५७ भेट से वट है ।

एत नदहय ।

१ नरनद असायना उपम ६१ ।

२ एत दिदा वा लम्बा असायने-विरो ६।
द्वे नन में दवा को ।

३ दिव लम्बा असायने-विरो ६।
न न ।

- ६ तपस्विनी का विनय ।
- ७ बहुमुरीनीनो विनय ।
- ८ ममांगी नो विनय ।
- ९ चार तीयनो विनय ।
- १० साधमि का विनय ।

द्विजे सम्यक्तनी मीन परीक्षा ।

- १ श्री अरीहत देखनी ने तो देख जाये ।
- २ श्री सुमाधु मग पुरपा गुर नाथ ।
- ३ दया क्षमा य भम जाये ।

पाठान्तर मीन शुद्धता ।

- १ मन शुद्धता मनें करी श्री वीतराग देखने धार ।
- २ मन शुद्धता बचने थरी गुणग्राम श्री वीतराग देखा कर ।
- ३ काया शुद्धता, कायाये करी श्री वीतराग देखने नमस्कार कर ।

द्विजे लक्षण पाच ।

- १ मन, गुरु मित्र उपर मरीपा मात्र रख ।
- २ मनेरग, वैराग्य मात्र राखे ।

३ तिर, आत्म धर्मिष्ठ सु तिर (ताद) ।

४ अनुपमा, पर तीरन दुग्गी दर्शन शम्भा करे,
मदा मारा ज्ञान गदर ।

५ आत्मिष्ठता ज्ञानिष्ठ इत्यना गृह्य माय
गोमती ने सुचार नहीं, या निन पवन उप आत्मा
(विद्यमान) गत दृष्ट ।

सम्पत्तिना पार दुपय (अनापार) ।

१ महा- धी जिन वरन मदि मष्ट (गदा
राते गा दोर अदात् जिन पयत पर निर्गत पग वन ता
दोष रने ।

२ ईसा अथ तीर्थि नो आटम्पर दर्शन पाद
करे ता दाप ला, जनरा धम्म की वापु कर नहीं ता
दोष रने ।

३ सिम्पिष्ठा -कर्मिष्ठ वन माद गद आत्मा,
ता गायु गार्धना मनिन वन दर्शन दुग्गी कर ता दाप
अविष्ठा लाते धी मीदर ददानी आत्मा मदन कर्मिष्ठ
कर हे न उपर सिम्पिष्ठा आगे नहीं ता दाप रने ।

४ ददददद दान-अनेग मीदर की कर्मिष्ठ कर
मे दोर अविष्ठा लाते दददद की दान मीदर दद
रने को नहीं मे दोर रने ।

५ परपापडी मद्य—अन्य तीर्थिरे पामे जाणा आणो रागे, तथा सग करे तो दोष अतिगर लाग, परपापडी का परगो सग करे नहीं तो दोष टले ।

त्रिये सम्यक्स्मना पाच भूषण ।

१ त्रिन शामन के रिणय चतुराई रागे और धीम्ब वा हाय ।

२ त्रिन मारगा तथा गुणनि दिपारे ।

३ त्रिन शामन रिणय सुमातु, माधी गुणमात्र तिगा की भक्ति मेरा करे ।

४ अनरा गुण ने धर्म के रिगे स्थिर करे ।

५ चतुरि मंगनी मेरा करे ।

त्रिये सम्यक्स्मना आठ प्रभाविक ।

१ त्रिण काल जटला मर होय, ने भली अन जेतो ने प्रतिगोरी उन्नति करे ।

२ धर्म कथा कदन में शर होय ।

३ प्रत्यक्ष दृष्टान्त गूढ अन्य धर्मी म वद कर धन लगान ।

४ विविध इन करी भूत भविष्य वतमान की रत्न हू ।

४ विरक्त तरस्या वरी धर्म की उद्गति कर ।

५ अनेक प्रकार की विद्या का गणना कर ।

७ पूर्ण अवननादिष मिद्ध वरी होय, विरक्त वरी धर्म की उद्गति कर ।

८ वरिष्ठा जाइवना वरी धर्म की उद्गति कर ।

हिये ६ आचार लिख्यने ।

१ राजा के आग्रह में (हठ में) अन्यविधि का बदनाम हो तो सम्बन्ध भाग नहीं ।

२ पशुत गजनादिष व बदने में अन्य विधि का बदनाम हो तो सम्बन्ध भाग नहीं ।

३ जोगीर तथा बलवान् के शत्रु में अन्यविधि का बदनाम हो तो सम्बन्ध भाग नहीं ।

४ देशी के बदने में अन्य विधि का बदनाम होने में सम्बन्ध भाग नहीं ।

५ राजा विरक्त तथा गुरुमन्त्रिक के हठ में अन्य विधि का बदनाम हो तो सम्बन्ध भाग नहीं ।

६ राजा वरिष्ठा अथवा अग्रजों के हठ में अन्य विधि का बदनाम होने में सम्बन्ध भाग नहीं ।

ત્રિવે સમ્યક્તા થી ૬ જાણના (ગતના) ।

- ૧ અન્યતિર્થિ એવગુરુ ને પદે નહીં ।
- ૨ અન્યતિર્થિના ગુણગ્રામ પર નહીં ।
- ૩ અન્યતિર્થિ ગુ પહિલી ચોળ્યા વના થાપ પોલ નહીં ।
- ૪ અન્યતિર્થિની વાર વાર પરિચય મગત કરે નહીં ।
- ૫ અન્ય તિર્થિ ને ચાર પ્રસાદ નો દાન દેઈ મગતના ન કરે ।
- ૬ અન્ય તિર્થિ ને વસ્તુ દેતા નિવરા જાગે નહીં ।

ત્રિવે સમ્યક્ત્વના છુ સ્થાનક ।

- ૧ ચારિત્ર ધર્મ રૂપી કૃત્ત અને સમ્યક્ત રૂપી મૂલ (વીન) ।
- ૨ ચારિત્ર ધર્મ રૂપીયો નગર અને સમ્યક્ત રૂપી દરવાજા ।
- ૪ ચારિત્ર ધર્મરૂપી મહેલ અને સમ્યક્ત રૂપી નીર ।
- ૩ ચારિત્ર ધર્મ રૂપી આભૂષણ (મહણ) સમ્યક્ત રૂપી મનુષ્ય (સદુક) ।
- ૫ ચારિત્ર ધર્મ રૂપી વસ્તુ (ક્રિયાણો) અને સમ્યક્ત રૂપી દુકાન ।
- ૬, ચારિત્ર ધર્મ રૂપી મોજન અને સમ્યક્ત રૂપી થાલ ।

४ अशुचि भायना ते यो शरीर मगारी अशुचिना
भायन छे, माय लोही नग नमा जाले करिने तथा चामरा
परिने चिटयो छे, तेहने धोया शुचि न होय इम चिन्ते ते
भायना मनतकुमारनी चक्रवर्ति जी ने भाई ।

अन्य भायना धन बुद्धि मर मेरे से जुदा है ते
भायना मृगापुत्रनी ने भाई । यह सङ्गठ भेद व्याख्या
सम्पत्त के जाणरा ।

५ हिचे पाचवा सम्पत्त कहे छे ।

ते गुरुनां उपदेश विना जाति स्मरण ध्याने कर्त
उपने, मृगापुत्रनी परे तथा अशुचा केरलीनी परे निनधर्म
विना गुणीया साचो थद्वे ते निसर्ग सम्पत्त कहिने ।

६ हिचे छद्मठा सम्पत्त कहे छे ।

उपदेश रूची ते गुरुना उपदेश सामली पामे
गुरु समिपे देय गुरु धर्म्मा गुण सामली तेहने सांचो
थद्वे, तहत करी जाणे, तेहने उपदेश रचि सम्पत्त
कहिने ।

७ हिचे सातवा सम्पत्त कहे छे ।

क्रिया रुचि ते शुद्ध क्रिया यकी निपने ते मिद्वान्त
माहि मगाने ने शुद्ध आचार कथो छे तिम हीज प्रवर्त
क्रिया रुचि कहिन ।

निवे जाडनो रोयक सम्यजन फरे ले ।

उरुचि थरी उपन, तेहना भेट दज ते निचे मुजिब नाथना ।

१ निमा रूची ने जाति स्मरणाति जाने करीन
जीनातिक पदार्थ जारे और दया दालवानी रूची उपने
ते द्रव्य धरी, धेन धकी, काल धरी, भार धरी श्री
परिपूर देवनी ने जेहना नाव कया छ तहना ही श्रद्ध ।

२ उपनेज रूची न छम्मम्य नया फेरलीना उप
देस धरी जीनाति पदार्थ सामनीन तवाहीन श्रद्धे ।

३ आत्रा रूची ने जिगा थरी गगदप धरानादिक
गया छे, त गहना तारिहर ताउधर तथा आचायादिकनी
अभिनाया आदिने आत्रा क मव ।

४ एउ रूची, ते आचायागाति ड्यारे शग तथा
उपांग एउ भिद्वान भरीति जीनादिक पदार्थ नो जालपयो
की भदा लारे ।

५ बीज रूची त एउ पद भगारे करीन परापद
जारे, अयना एउ जीव आदि देखने घना जीनातिक पदार्थ
ने निवे मति बिम्बे, जिन पाणिन विषे नेल नो बिदुस
थारा धरा चने, निम्बे अयना, एक बीज थरी अ
राज उरुव त बीज रूची रूची ।

६ अमीगम रुनि त आसारागाणि अग दष्टि दा प्रमुख चउदा पूव घन मिद्धा का अर्ध सहित अर्ध तरह जाणपयो कर ।

७ विस्ताररूनी ते घर्माग्नि कापाटि पद् द्रव्यों का प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण, आपमा प्रमाण, आन प्रमाण, नैगम नय मग्रह नय, व्यवहार नय, श्रुत सूत्र नय, शब्द नय, समभिरूढ नय, एव भूत नय, चार नियमाव करी सर्व भाव जाण्ये ।

८ क्रिया रूनी ते अद्वापूर्वक पंच महाव्रत बाता भेद तप, दश प्रकार का नियम पाच सुमति, तीन गुणि ने नियम, भाव सहित क्रिया करवानी रूची उपने ।

९ मखेप रुचि ते बोधादि अन्य मतियों ना शास्त्र तथा तयोना गुरु आदिकनी श्रद्धाने निषे, उपयाग रहित छे, अने स्व समय ने विषे पिण कुमल नहीं पिय जीवादि पदार्थ ने निषे सचेप मात्र श्रद्धा करे, तेइने सघर रुचि वहीये ।

१० धर्म रुचि ते श्री तीर्थर देवनी ने धम्म कसो छे ते भाव सहित श्रद्धे, तथा जीवादि नय पदार्थ स्वसमयादिक ने निष परिचय करी शुद्ध श्रद्धा आण्ये, तथा शुद्ध श्रद्धा क्रियानान गुह्यनी सेवा करे, एव दश प्रकार गेचक सम्मत्ता का भव जाण्ये ।

નવમા દીપક મમ્મકત કહે છે ।

તે ત્રિપદ ત્રિમ અનેક ઠામે તો ઉજાલો કરે, અને
આપણે તને અયારો ગાય તિમ અમલ્ય જીવ ઉપદેશ દ્વારા
અન્ય જીવો ને મમ્મકત પમાડે ગુરુ ધર્મ મેં સ્થાપન કરે,
પિણ પોતે મમ્મકત ગહિત લેહને દિપક મમ્મકત કહીલે ।



१ नाम डार	राम	राम	चय राम	देव
२ लपट डार	७ प्रकृति स्वाम अनन्तान वरी ४ कोध मान माया नाम मन्त्र मा दिनी मित्रपोहिनी मित्रान माहिनी	७ प्रकृति अनन्तान	४ लपट २ उपरमावे २ लपट तपा उपरमावे	१ वरी १ लपट तपा उपरमावे
३ अन्तर पाव डार	मन्त्र गनी म अन्तर ४ गनी म पाव	४ गनी में अन्तर ४ गनी में पाव	४ गनी में अन्तर ४ गनी में पाव	४ गनी में अन्तर ४ गनी में पाव
४ अन्तर प्रमाण डार	अन्तर	अन्तर	अन्तर	अन्तर
५ लपट डार	मादि अन्तर अन्तर ४ अन्तर ही	अन्तर अन्तर	अन्तर अन्तर मा २ अन्तर १ अन्तर अन्तर	१० अन्तर म १० अन्तर ११ अन्तर अन्तर
६ अन्तर अन्तर	अन्तर	अन्तर	अन्तर	अन्तर

यत् उत्तर विचार लिख्यते ।

मिथ्यात्व न उत्तर जीव अता पतु पामे अटकन
 उदै अगदपतु पामे, जोगो उँ लेखा पामे, अग्रत्या
 रगानी ना उँ अगिगति पामे सोन उँ श्रोयादि ४
 पामे, रषाय माडनी न उँ वेडरित पामे, नाम कम ने
 उँ गनी ४ मय परिभ्रमण पामे, मिथ्याय मोहनी ने उँ
 मिथ्याय पामे ।

(श्री उत्तर विचार मधूगद्)

अथ श्री ज्ञान बहोनरी लिख्यते ।

कोहा ।

प्रणम्य भी परमात्मा, धरि मन्त्रु को भ्यान ।
बहुत्र आम बोधको, कर बहुतर ज्ञान ॥ १ ॥

१ पहल बोले, महा दुलम मनुष्य जन्म पाय करके
आपणि आमा आलस्य प्रमाद और माह में दिन गमावे
मो माहा मूर्ख जाण्यो ।

२ दूसर बोले, धर्म की सब मामग्री पायके आमागे
साधन नहीं कर सा माहा मूर्ख ।

३ तीसरे बोले पुण्य रूप पुत्रि तो माय लाया नहीं
और मुग्धी होकर वास्ते बची हाय २ कर अधिक कृपा
बचाव मो माहा मूर्ख ।

४ चौथे बोले, कोई पुण्य न उदय सु ज्ञानरी प्राप्ति
हूँ, लोभ गहने दुमदाह जाण्या, फिर मनाय नहीं राख
मो माहा मूर्ख ।

५ पाँचव बोले, कोई मन्त्रु की कृपा सु ज्ञान रत्न
पायो निशम्य अधिकत्र पणु शोभा नाण्या, फिर समार
मन्दर्बि कट आन पद, निशर धाग्यता न राख सा
मूर्ख मूर्ख ।

६ छठे बोलें, ज्ञान पायो निगम कही ममार अमार
साएपो, फिर झूठ बोल प्रपच करे, बलेश बढ़ावे सो
माहा मूर्ख ।

७ सातमें बोलें, आनारी शक्ति प्रमाणें माँगन प्रत
पचन्नाय नहीं करे, केई दुष्ट जीव माँगन लेकर भागे सो
माहा मूर्ख ।

८ आठमें बोलें, पूर्व जन्मरा पापरा उदय कही बुरा
आवे, निवारें आनारे बिषे ज्ञान विचारी शीतलता नहीं
करे सो माहा मूर्ख ।

९ नवमें बोलें, माता बेदर्नारे उदय कही सुख आवे
विचारें अमिमान करे, धर्म रत्न विशार देवे सो माहा मूर्ख ।

१० दशमें बोलें, ज्ञान बढ़ावा को उपाय तो नहीं करे
और ममार बढ़ावा का बग्या खाटा उपाय कर मो माहा मूर्ख ।

११ ईग्यारमें बोलें, उत्तम ज्ञानि की सगत पाय
कर आपणि आमा राग द्वेष रहित निर्मल नहीं करे,
अथवा उपाय नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

१२ बारमें बोलें, नान वानरी सेवा भस्ति कराने
आपणि आत्मा उच्चल पाप रहित न करे सो माहा मूर्ख ।

१३ तेरहमें बोलें, व्रत पञ्चम्याण्य विषय दृष्टा नहीं
राखे कष्ट पड़े निगारे धर्म ने छोड़ देवे सो माहा मूर्ख ।

२८ अट्टाइनमें बाले, बिना प्रयोनन मा ते ऊर,
नीच, ठिराणे दौढाये, रूपयान स्त्री देखी चाहना कर
अने कुमकल्प विकल्प मनमु उठाये, यथा पाप कर्म बाध
सो माहा मूर्ख ।

२९ उनतीनमें बोले, क्षति शक्ति निरोग शरीर
पाय कर तपम्यादि न कर सो माहा मूर्ख ।

३० तीनमें बोले, पूर्व जन्मरी कमाईग जोगसु अगुम
कम भोगवतां, यथो हाय विलाप करे और अति, ब्र,
ध्यान चितवें सो माहा मूर्ख ।

३१ इकत्तिसमें बोले, मनुष्य जन्म पायरर आत्म
तत्व नहीं विचारे, अच्छा धम्म कारन की वितयना नहीं
करे सो माहा मूर्ख ।

३२ वत्तिसमें बोले, धर्मीं पुरुष आत्मार्थि आत्म
साधन करता देखी, तिणारी निन्दा करे, तिणी उपरी
द्वेष धरे, ईषा करे, तियारो अपवाद करे तथा हासि करे
सो माहा मूर्ख ।

३३ तेत्तिसमें बोले, श्री मणयत वीतराग रा यचन
भाहि प्रतीत नहीं राखे, मन माहि शका कखा करी आपरो
जन्म बिगाड़े सो माहा मूर्ख ।

३४ चौत्तिसमें बोले, महा मोटा गुणयान उत्तम

३५ पेंतिममें बोले, समार रूप दावानल, माहि काम, मोघ, लोभ, मोहे करीने लिख रहे जिय बलति याग माहि गु नार वस्तु धर्म रन नहीं काड़े मो माहा मूर्ख ।

३६ अक्षिममें बोले, अनता काल रलता घणा पुण्य रा उदय तु पुण्य रूप नानाशरि निधाम पायो, फिर पायकर विधामरी जग्या दलेश बढ़ावे, आमा ने फिर दुख माहे पटके सो माहा मूर्ख ।

३७ तैत्तिममें बोले, गया काल में अनता जम गरण करपा, अनता दुख देग्या त्रिपन बिमारे सो माहा मूर्ख ।

३८ अक्षिममें बोले, इग जन्मने बिपे उलम कार्य नहीं करे, अपवा दति शक्ति पर उपकार नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

३९ उानचालिममें बोले, आयुष्मरी वपल पयो दैम फेर सनार माहि, रावो गवा रहे, गदारो पारो करे सो माहा मूर्ख ।

४० आलिममें बोले बिना घृत होम्वा वृष्टा रूप अग्नि से ज्वाला उठ रही है तिर माहि फिर पतिग्रह रूप घृत होमने रीतल कियो बहारे सो माहा मूर्ख ।

४१ शालिममें बोले गुरुगी अननी वेम्ना शम्भ माहि नांभलि दिया माहि अस्त्रि नद जागिने फेर जाना ने समझारे नहीं, पार बग्या एवे नदा या माहा मूर्ख ।

४० चयानिममें बोले, जग अवस्था आय जावे, जाग बिगलाय जावे, हाथ पाव थक जावे, ऐसी बेहाला में होजावे आपणि दृष्टि मु देखे तो पिण आपणा मन न समझा नही, और हाथ २ धन धन करतोहिज रह सा माहा मूख ।

४३ चयानिममें बोले, अज्ञानि जीव आगो दिवस हाथ विकल्प में, घाघा में पूरा कर, रात्रि प्रमाद माहि पूर्ण कर पिण दाव पही ममता ममाधि लायकर आपणी आमागे साधन नहीं कर, माट हाथरी होर कुआ माहि नाम पिण दाव हाथ दार आपणा हाथ माहि नहीं रात्र मो माहा मूख ।

४४ चयानिममें बाल, बिना प्रयाजन पीव आपणी आमान दुगति माहि पटक, भूटा उपदेश देने, पाररा उरग दव, मागी २ कुबिद्या लाकान मित्राव, महा माहा अनध कगार मा माहा मूख ।

४५ चयानिममें बाल चमत् चलाचल मग्नो प्रत्यक्ष तेज है, पिण मन माहि मग्नता मय नहीं लार, और सन्नि पगिहार मरे स्थिर करी गाल, दिण धन माहि विनय हाथ नायगा ऐसी नश विनार मा माहा मूख ।

४६ चयानिममें बाले, मूर्ख जीव संसार ग कात्र अज्ञान है, दृष्टि न. माहम कर चान, और आपण नित्र कत्र ने प्रत्यक्ष करण म अनार कत्र ग दुन न हाव

जावे ऐमो मोटो कान है तिणने अकाम करी जाये सो माहा मूर्ख ।

४७ नेतालिसमें बोले, अजानि जीव आपयो नाम कर्म बढ़ाया की तथा कीर्ति बढ़ाया की अनेक आरम करे महा मोटा पाप करे है, बुद्ध मय नहीं राखे, पिछ अनेक भयारे रिषय बुरा सुगतना पड़ेगा, ऐमो विचार नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

४८ अइतालिसमें बोले, पूरे भवरी कमाईरा जोग गु सतिम पापकर पाप कर्म दरता बर्ये नहीं सो माहा मूर्ख ।

४९ उगनचाममें बोले, कई अपानि जीव शक्ति होय जद वो धर्मध्यान करी आमारो कल्याण करे नहीं, फिर बुद्ध अवस्था में शत्रिया द्विय पड जावे तर विद्यगी इच्छा करे पिय बग नहीं मक वैमे आग लाया बुद्धो सुदामारो उपाय करे नो माहा मूर्ख ।

५० पयानमें बोले, गीतल, सतोष, एमा, इया, गर्भारता, चैरे, इत्यादि अनेक भला ० गुणारो बढ़ावारो अभ्यास नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

५१ इकामनमें बोले, हिमा, भूट, चोरो, दुग्रील, निंदा, ईर्ष्या, कपटार्थ इत्यादि अनेक अशुभ कार्य नही छोड़े मा माहा मूर्ख ।

५२ ज्ञानमें बोले, धर्म की बात तथा श्रद्धा नहीं रखे, धर्म कर्ता आलस कर, काल चक्र माया ऊपर घूम रमो है, विषय ष्करो मरोसो नहि और अज्ञानि जीव धर्म करिबारा बापदा करे सो माहा मूर्ख ।

५३ तरेपनमें बोले, अमवि जीव दूजा को उपदेश देवे, आपसी आत्मा ने समझावे नहीं, ऐसे ही मूख अज्ञानि साकां ने ठगवाने राजि करवा धर्म उपदेश देव, आपसि कीर्ति बधारवा की आशा सहित धर्म ध्यान क्रियादिक करे सो माहा मूर्ख ।

५४ खोपनमें बोले, आप पोते सुनिया है, और दूजा को दुनिया देनी, आप राबी होव, दुनिया की हांमि करे दीन हीन दुबल की करुणा मन मांदि नहीं जाये, दया नहीं सावे सो माहा मूर्ख ।

५५ वषावनमें बोले, ज्ञान बापारो सार कोई है आपसि आत्मा का कल्याण करवो, दूजा जीवां ने उपदेश देयां दुम्नकां सिन्धाय २ दणी, धर्म के मार्ग लगाव देया उपकार करवो तिन मांदि यणो ज्ञान है, कोई हिब बुद्धि या ज्ञान बाय कर दूजा को उपकार करे नहीं, ज्ञान बिपावना किरे सो माहा मूर्ख ।

५६ ज्ञानमें जाने, कोईकु धर्म ध्यान, व्रत, नेम वरदान आत्मा कर्ता बर्जना नहीं, अनराव देनी

नहीं ब्रह्मक अज्ञानि आपखा कुटुम्ब कुं मोह भाव बने
हे सो माहा मूर्ख ।

५७ सत्तावनमें बोले, कृष्णमनि हिंसक झूठो सापर
थोर अन्यायी, जुगल, इषावन्त, क्रोधि मानि, कपटि,
लोमि, अर्थायवान, इत्यादिकरी संगत करी आपरो ज्ञान
गुण बहारपो बहावे सो माहा मूर्ख ।

५८ अष्टावनमें बोले, क्रोध, लोभ, मय हांसि, इय
चार प्रकार से, झूठरो पाप धर्यो लागे है, हे बेतन ओ
तु धारी आत्मारो ब्रह्माय करपो बहावे है सो असत्य
वचन को त्यज, तिर्यगुं सर्व पाप टल जायगा, ऐसी लाख
उपयोग नहीं राखे सो माहा मूर्ख ।

५९ गुनमठमें बोले, दशवाना घटाया घट, और
बधवाया बधे, तिर्यारा नाम, १ क्लेश, २ हांसि, ३ मैथुन
४ स्त्राज, ५ शोक, ६ बिता, ७ निद्रा, ८ वैर, ९ तृष्या,
१० निष्ठा, इत्यने नहीं घटावे सो माहा मूर्ख ।

६० साठमें बोले, ज्ञान बधाया का दश उपाय कया
है (१) आहार थोड़ो करे (२) निद्रा थोड़ी लेवे (३) थोड़ो
बोले (४) पण्डित पाम रहै (५) क्रोध नहीं करे (६) विनय
धर्यो करे (७) पाच इन्द्रिय को स्वाद जीते (८) बसा
शास्त्र बाँचे (९) ज्ञानवालांरे पाम मखे (१०) धर्यो उपम
करे, इय दश उपाय करके ज्ञान की वृद्धि नहीं करे, धनी
जागवार्न आत्मग जरे मो माहा मूर्ख ।

६१ इगमरमें बोल, बीरो दरा वन्तु की सामग्री पावली माठा दुर्लभ कही है १ मनुष्य जन्म, २ आयुदरा, ३ उत्तम कुल, ४ माटा आउगा, ५ इष्टि सम्पूर्ण, ६ निगम शरीर, ७ माधुमन्तरी जोगराडे ८ सूत्र मित्रा का मुगरा, धम्म की अद्वा प्रतीति तारणी, १० काया कष्ट की धम्म ध्यान वरणा, इत्यादि मामगि कोई पुण्य का उदयत पाव कर धम्म साधन नहीं करे मो माता मूर्ख ।

६२ बामरमें बाल, ज वन्तु धणी दुर्लभ पावि निखरा पन्ना यन रा जेमा अगानि समभे नहीं, मोर नाय वरा कर अष्टि परिवार माहि परगमा है, ग्दरा धारा करणों है वण दल मर यहाँ का यहाँ बरपा रडगा कुछ मा माय आरगा नहीं जिण याम्म माह भार अत्रान मार का छाड़ कर धम्म साधन करणी नहीं कर मो विद्ध पथानाय करगा पड़ेगा, पन्ना नहीं निहार मा माता मूर्ख ।

६३ नीगमरम बाल, धम्म २ मर काइ कह रिण धम्म की मने विचार काइ जाणु नहीं, धम्म ता काय मान माता सोम, दू करणामु प्रगत पाव है, अनन ज्ञान प्रगट है काई टिया को धम्म कह है मा क्रिया में ता पुण्य को बर है, अष्टो है, रिण निरेग नहीं पन्ना जाय दार मर मरा लाभ को दू कर धम्म ज्ञान प्रगत नहीं कर मो मूर्ख मूर्ख ।

६४ सातठम दात, जाग माहि जीव मर्ब अधो
अध लागदा है, जहा दसो वहा आप आपणे स्वार्थ की
पान पतावे है, परमार्थ का गुढ मार्ग लिखाचे वारा थोडा
है लिख सामने है चैतन्य परमार्थ उषम ज्ञानपार्श्व
परिचा दर, निरुपरी सेवा करसी त समार रूप महुद्र माहि
आपणो जीव अनादि कालतु इषग्यो है, तिका भव मनु
ष्य बन रूप किनारो पाप कर, जामान दुबारोको उपाय
करयो नहीं, तिरवारो उपाय करयो, नहीं कर, सो माहा मूर्ख ।

६५ पैमठमें बोले, ओर चैतन धर्म करवाको भव
सर दण्डो जाय है, चण्ड ० में आउछा घटे है, लिख तु
फाद विचार है नहीं इता मनुष्य जम पाप कर घृया
हार जाय है, ओर ! मूस ! गया अरमर विर पिछो आवेगा
नहीं निमनई तृप्या बनये है पिग दिपामाहि अखि तरङ्ग
दिचार दर, ओ तृप्या बपायो, सतार पये है, तृप्या
घटायो समार घट है, एमो दिचार कर तृप्या नहीं घटाये,
सो माहा मूर्ख ।

६६ सातठमें बाले, ओई जगत माहि सुसी है
नहीं, जहा देखा तहा सर जीव कर्मा का जाग मु दुरी
हा रभा छे घया अज्ञानी मोह भाग्य कर समार माहि
सुख मान रया है पिछ मुख फर्द भी हाव नहीं । जु बलती
आग माहि बेग शीतलता होवे तो समार माहि सुख होवे
मुन तो आपणे मनोव भाव में है सो मनोव को छान कर

मनकी विकसता बढ़ाये है सो माहा मूर्ख ।

६७ समठमें बोलो, हे चैतन्य तु इष्ट ससार माहि काह लामाम रखो छे, अज्ञान दशा माहि काह भारो भारा कर रखो छे, कोइ फिखरो नहीं, मर्व आप आपखा स्वार्थे रोये है जिखरो स्वाध नहीं पोंडच मो गनी नहीं, पूग सो राजि, अर ! भाला ! तने माह द्यक चढ़ रही है, तियसु फाई छरु तो नहीं, पिय आगे पयो दुख भोगनो पड़गा, एसो बिचार ससार सु उदासिनता भाये, नहीं रहे सो माहा मूर्ख ।

६८ अवसठमें बोलो, अरे जीव तु इष्ट आगे पूर्व बन्म माहि अन्धि पुषय कमार नहीं किनि तियसु यहां दुखा होय रखो है पराधीन पये आजीविका पूरी करे है फिर इष्ट जन्म माहि मुक्त कार्य करी स्वार्थि साथ बाध तो नहीं सो आगे फिर भी दुखी होगा, एसो बिचारी उपाय नहीं करे, सो माहा मूर्ख ।

६९ गुणतरेमें बोलो, अरे ! मूर्ख ! तु पाप करतो काह बिचारतो नहीं तु जाखे है लक्षिम भेली करूगा सो दुख की चक्र में काम आवेगा सो दुख की वक्त में तो पाप को उदय भावे है जीवारे पापरो उदय आवे है तिवारे लक्षिम पिब रहेगा नहीं लक्षिम तो पुषपरा उदय मेंदिन है एसो बिचार मूर्खा छोट कर आभसाधन नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

७० सीत्तरमें बोले, अरे ! बोला ! तु पेट भरवांगे चास्ते सोच कर नवा कर्म्मों को बध काहे कु चांधता है जो कुछ पूर्व धन्म माहिं कमाइ कर साथ लायो है, सो महा आपु आप सहज ही मिलजायगा, सोच किया कुछ अधि को ओझो होवे नहीं ऐमो विचार आत्मा स्थिर नहीं करे सो माहा मूर्ख ।

७१ इहत्तरमें बोले, जगत माहि आप आपखा मनका भगड़ा कर रखा है पिय तत्व बात कोई विदार नहीं, तत्व बात को स्वमत में एका कही है, काम, क्रोध, लोभ, मोह इण चार को छोटाया आमा निमल होय है, बाहु छोटाया बिना मुक्ति नहीं, तप, जप, नियम अत सर्व इण सहित निष्फल है, ऐसी बात भव मत में कही है, पिरा मन्द बुद्धि वाला जीव समझे नहीं, इकनाहक बात विवाद करी जन्म पूरो करे सो माहा मूर्ख ।

७२ दोहत्तरमें बोले, दीपक सबको उद्योत करे है पिय आपरो नीचे सदा अन्धकार रहवे है कदीमि प्रकाश होवे नहीं सो अज्ञानि जीव दुजां ने आद्या २ उपदेश देवे पिय आप भूमार्ग चाले आपरो अज्ञान रूप अन्धकार हर करीने ज्ञान रूप सत्य प्रगट करे नहीं, पिख हे ! चैतन्य सर्व कर्म्मों को अत करीने केवल ज्ञान रूप महस्य सत्य उद्या आमारे विषै प्रगट करेगा निवार मोक्ष नगर पनेनेगा नहा अतना मुग लिलेनेगा ।

दोहा ।

बोले बोधोत्तर ण कक्षा, जिनागम अनुमार ।

मुखे मुख्यावे सरदेहे, ते पावे भवपार ॥ १ ॥

ज्ञान बोधोत्तरी नाम है कीनि भवि उपकार ।

अम्बालाल अर्जि करे, मुक्त प्रभु पार उतार ॥ २ ॥

मैं अनाथ अतहि दुखी, हरयो देखी ससार ॥

ठाठे नाथ सरय ग्रही, अब मोहे वेग उतार ॥ ३ ॥

सच अभिमे सात के, बदि दममी फागुन मास ।

रत्नपुरी मोह रची, पर निज आत्म प्रकाश ॥ ४ ॥

(इति श्री आत्म विचार वैराग्य रूप ज्ञान बोधोत्तरी सम्पूर्ण)

अथ ६ भावना लिख्यते ।

(१) पेली भावना समष्टी पुरुष आपके चेतन ने प्रसाम्पाता परदेशी जाये ।

(२) दमरी भावना समष्टी पुरुष आपके चेतन ने आठ कर्मों का कर्ता जाये ।

(३) तीमरी भावना समष्टी पुरुष आपके चेतन ने आठ कर्मों का भोक्ता जाये ।

(४) चौथी भावना समष्टी पुरुष आपका आठ रुचिक परदेश सिद्ध समान जाये ।

(५) पाचवी भावना समष्टी पुरुष आपके चेतन ने मोष जाने वाला जाये ।

(६) छठी भावना समष्टी पुरुष माघ का चार कारण जाये, ज्ञान, द्युन, चारित्र, वर ।

इति सम्पूर्णम्

अथ आत्मनिन्दा तिग्यने ।

ह आत्मा ! हे चेतन ! ए बुद्ध्या, ए कुश्रद्धाया,
 ए अकार्ये, प्रवृत्ति, ए रस गृद्धि पयो, ए खोटी दृष्टां साना
 पिक दोष धडी मात्र कालमें तु मत चिंतवन कर, क्या रे तू
 सम्यक् मोहनी में, क्या रे तू मिश्र मोहनी में, क्या रे तू
 मिथ्या ब मोहनी में, क्या रे तू अह राग में, क्या रे तू काम
 राग में, क्या रे तू दृष्टि राग में, क्या रे तू ह्यगुरु में, क्या रे
 तू ह्यदेव में, क्या रे तू दुष्कर्म्म में, क्या रे तू ज्ञान विराडना
 में, क्या रे तू दशन विराडना में, क्या रे तू चारित्र्य विरा
 डना में, क्या रे तू मनोदण्ड में, क्या रे तू वजनदण्ड में
 क्या रे तू वायादण्ड में, क्या रे तू हास्य में, क्या रे तू रति में,
 क्या रे तू अरति में, क्या रे तू भय में, क्या रे तू शोक में, क्या
 रे तू दुःख में, क्या रे तू कृप्यलेस्या में, क्या रे तू तीनव
 स्यामें, क्या रे तू कापोतलक्ष्यामें, क्या रे तू अदिगारवमें,
 क्या रे तू रमगारव में, क्या रे तू सातागारव में, क्या रे तू
 मायाशय्य में, क्या रे तू निषायाशय्य में, क्या रे तू मिथ्या
 दर्शनशय्य में, क्या रे यारे तेहरे काटिया दोला, आंश फीर
 थे, क्या रे यारे अहारे पापस्थान वाला आस किन छ, रे
 तू अमा माहापुटि, माहा दुःखारि, अरे तू हीणतिबग
 जप्ता, रे तू हीण पुनीया, रे तू हीण दृष्टि, रे तू अघोर पाप
 रा कर्म्मडार, रे तू बुद्धि, वापिष्ट नीन प्राय ता थार अनना

नुबधियो श्रोत्र, आतानुबधियो मान, अनतानुबधिया मा-
या, अने लोभगी चोकडी, बापदा थारे छपि नहीं, गुण्डाचो
थार पलट्यो नहीं, थिरजुच थार आयो नहीं, वृष्णारूपी
दाह थारे तिष्टि नहीं, आकुल व्याकुलता थारे मिटी नहीं,
दरियाववाला वझोल उज्जले, थु थारे वृष्णा कपीया कझोल
उज्जन रजा छे, नू तो क्रिया करे छै सा छन्य मन तु करे
छै, धीये गुण्डु क्रीरा सो थारे सोम लागमी, रत्नपये
हरी जो क्रिया, मा सो द्वारपर सीपये सरीसी छै, रे चेतन
अनतकाय, अमय, शीतवृष, जरदो, डामली, अमरा, भाग
ठमाडु रा सोम लेलेक भाज्या, रे चेतन, बापदा थारो कठे
एग्यो होनि, रे चेतन नू पुटल र बास्ते कितरीएक आकुल
व्याकुलतार कर रग्यो छे, भोरो, म्हारे पारम पत्थर, म्हारे
नवनिधान, म्हारे रमकूपो, म्हारे रसापय, म्हारे पित्रायेस,
म्हारे अष्ट गुटका वा देवता ने वश कर, वा बादशाह
होनाऊ, वा राजा होवाऊ, मेनापनि हावाऊ, रे बापदा
थारे तो ए शर्ता उपनेही उपने, दशमे गुण्डाचो बाता
ने ही सोमना परिहार नहीं तो रे बापदा थारी तो गरज
कठेगु सरे, रे चेतन नू थु मनमें पितव रग्यो छै, म्हा रो
थार म्हातो पिता, म्हारी माता, म्हारा पुत्र, म्हारी कलत्र (छी)
म्हागे पुटल, थारे चेतन योगसि छिगते चौरामी साख पर
करतो किण्यो संसार में न कियरो नू छै, न ओई थारा,
रे चेतन थारी उपनि तो दण्ड, केई दार मापय, केई वार दुष्ट
परो, केईवार दुनीन्यो, केईवार मीन्यो, न बाग नच ने

दख, ठग, रटी कथोयो, हे मातानी, हे पितानी हूँ डाग
पाप करू छु मो कुछ मोगनमी, ए बेटी करमी मो भाग
बमी, तो बिकार पढो इष्ट ममार ने, ममार में बोंड किरग
नई, आ मनुष्य जन्म, आयदेश, आर्यकुल, श्रावक ग
खोलीया, प्रह्वनीरो धर्म ते पुण्यानु रचि पुण्यमु पारा,
पापकर हे बापडा ते आझण कागला ने चिंतामणि रत्न
पापकर खाया, निम त, चिंतामणि रत्न रूप धर्म खाया,
आरी आत्मागी गरज कथुकर मरे, रे चेतन तु कह, हु, रे
तू कुछ ? भिष्टा माहेली लट्ठ, तुहिन दुष्टो, मानरूपी
गनउपर बाहुबल चढ्यो, अर मज्जलतो मान थो, गष्टी
मुदरी बाई मरीणो, समझारण बालि मिलि, जद समझीया,
बापडा निशाग आ मान, सो थारो किमो हनाल होमि, ए
धन दग तु भगत महाराज, जियार कितनी एक राजगिरी
माभाग हुता ता, के बिकार हुतो, म्हारे राज न बिकार
हुतो, पाटन बिकार हुतो, चक्रवर्ति की पदवि ने बिकार
हुवा, म्हार निषय मुखान, धनछ त, तीर्थर महाराजना
देशगिनी धम पाने छ धनछे ज सर्व श्रुति धर्म पाल छ,
धन जे गानदे छे, धन ने शीपल पाल छ, धन जे तपस्या
करे छे, धन्य जे भावना भावे छे, तो के मानना भावना
मतांगिक कवल आन, केरतदर्शन, पास्या, ता क तू उवांगी
बागवती मन्तर उव ता तेमठ गिलासारा पुवन नमस्कारो
श्रीय आग ग जीव तू पवन काल को भरत धेरों कीड़ने
निविण्ड शान, ए, चेतन, कर्म अजीब बन्तु, र चेतन त

लीय दम्पु, २ चतन बीसु लीरता मदा पग्या कर विज
 अत्रीरगु वगुजर विग तु निदन फम्मे, मदा मदन २
 पतन, कम्मे नो चउदे वृषागिमा न उटाय पग्या,
 इचामे गुणटापग बीर मदन मारन वरुनता वम्मे
 प्रदापामनी, म्मादिदह म म्मादियाने विताय विषा म्
 दषम कम्मे नीय विविग क्का, क्कड वम्मे एव गा
 अटायन प्रहति प्रहविनकर नीचा जाय, माह कम्मे मा
 लाया, प्रह विमकर जीचा जाय, मम हम्मे जाय इकारी
 विमति, ६ चतन, चारिद नी पाना माहि ग्दी म्मापगु
 इगारि अट्टा माहि ग्दी, मदापमगु पग्यार गान म्मा
 गुण धारकर, वृष्ठा क्कणी दादन पृठी माय म्मे दा
 मापानी गग्ग म्मे, चतन म्मापु इनिगज एव गुणन
 गुणन, नीन गुमे गुमा, एवपता ईदर गान म्मापमग
 टानपग्या माह मदन बीरक, अरविष वम्मेवदव नी
 दादन गानपग्या, इगारिष इति वम्मे ता उगगलक,
 इगारि वम्मे माहपग्या इगारि म्माप म्मापानि एव
 चारिष एव एव दे दे इति इगारि नि क्का म्माप
 वम्मे एव दे एव म्मे इति एव इगारि २ एव
 इति एव इगारि म्मे, २ इगारि इति एव नी, इगारि
 एव इति, इगारि म्मे इगारि म्मे इगारि, एव दे ईद
 इति इगारि एव दे इगारि म्मे इगारि म्मे इगारि
 म्मे इगारि म्मे इगारि इति इगारि इगारि इति
 इति इगारि एव इगारि इति इगारि म्मे
 २ एव म्मे इति म्मे इति इति इति इति इति

दुमि, भाग माग पमिजाग देनां तो थारे मारी गा
 उच्य आमि ॥ दुहा ॥ सामायक मन शुद्ध करा,
 निंदा विरुद्धा पद परिहरे । पदा गुणा वाच्य कर
 करा निम भर सागर लिता तरो ॥ १ ॥ सना
 विरतरा ष सधरा छ, थारी तो सामायिक छ
 छ, सामायक मन अशुद्ध करा, निंदा विरुद्धा बहुनि छो
 तन, वाच्य पदधरी राय कठ छ, तें ता भुतज्ञानरा रा
 मान न कियो भुतज्ञानजीरा, गुयनो न कियो, तर दो
 शानायापिग अचकार पदल फिर गया, भुतज्ञानची रा
 आराधन करे छ, भुतज्ञानची रा बहु मान कर छे ज्ञांग
 ज्ञान दर्शन, चारित्र्य निमल हावे छ, निरकार ज्ञानी
 प्राप्ति हावे छ, जिकरि रे ज्ञान दर्शन, केवल री प्राप्ति हावे
 हे, निरकार रे सुक्त रूपीयि स्त्री पाणिग्रहण हावे ।
 ॥ दुहा ॥ दिवस प्रते दिवसे कोइ त्पु जाय मोना ठहो
 नचय प्रमाण । तेहने पुण्य न हावे, जेतलो, सामायक
 किधाफल तेतलो ॥ १ ॥ पिय तू चेतन इय मराम
 भूले मां, आ थारी सामायिक उबा नहीं भाई, ॥
 सामायक तो ऊचम जीवारी, भाई आ सामायक, आयर
 कामदेव सख, पुष्कलरी पूरणदास शेठ, चदायतमक
 राजा री, तू श्वे मरोसे भूले मां, रे चेतन थारी तो सामा
 यिक आ छ ॥ दुहा ॥ काम कान घरना चितवे, निंदा
 विरुद्धा कर छिज रहे । आरत रुद्र, ध्यान मन घरे, त
 सामायिक निष्कल करे ॥ २ ॥ थारी तो सामायिक आ
 मारं, और सामायिक रा ए सचण छे ॥ दुहा ॥ आप

परायो मरियो गियो, कचन पत्थर समरद घर, माचा
 सोढो गमलो भयो, ते मामापक मुद्धे करे ॥ १ ॥
 चद्रावतसक राजा जेइ मामापिक घत पाज्यो छद्, रे
 चदन, स्वप्नामाना यलो चाइ, पर आमाना बुगे चाइ, सो
 ते पर आत्माने बुगे न चाप्पों, स्वप्नामाने दिन बुगे चाप्पों,
 रे चदन तू कचन री ता बाज्झा गछे, पत्थर न शूर कर,
 घारे छाति उपर पत्थर पढ़ति, कचन कचन री प्राप्ति हुमी
 नही, र चदन तू तो सुषाराद बोत रप्पों छे, रे चदन तू
 दो घारे गुण ममाते तो ज्ञरति छ, अजरति छ, अघाति
 छ, अलति छ, अविनाशी छ, जे तू धारा गुण ममाल ता
 छे मारि, अहा ए म्हारा दुग्मन, ए म्हारा मज्जन, इय
 धारो दुरमन, इय धारा मज्जन, इ चदन धारे तो जाठ
 कर्म रूपीया शत्रु बैरी छे, ज्याने तू ज्ञान रूपीय स्थदय
 बाल भस्म करे, ज्यु धारी आभागी गरन मर, धारा, इ
 मम्य छु क अमम्य तु क दुर्मम्य छु, क कोर म्हा
 पाते समार पदा दिन टीजे छ, प्राप्ते तो ह भाइ अमम्य
 ही दीछु छु, पक्ष ता ज्ञानिया आव निहो ता रुग, र
 चदन, तू सामादिक तो धा करे छ, गुण ग्राज माइ
 करइका, उपजटा लेवे समइका, धारी ममादिक तो माया
 ज्ञानि मकागनि तो लेले लागनी ॥ बुद्ध ॥ आत्मनिर्देश
 आपसी, ज्ञान मार हुनि बीन, जे आत्म निर्देश करे मा
 नर मुहुन प्रीति ।

एति श्री आत्मनिर्देश सम्पूर्णम् ॥

हूँ, धारा योग परियाप दारवां तो धारे खारी मा
 उदय आगमि ॥ दुहा ॥ सामायक मन शुद्ध कर
 निन्दा विरथा पद परिहरो । पदो गुणो वाच्य हो
 कर, निम भय सागर रिला तरो ॥ १ ॥ मना
 यिन्नतरा ए लक्ष्य छे धारी तो सामायिक
 छे, सामायक मन अशुद्ध करा, निन्दा विरथा बहुनि हो
 तन, वाच्य पदधारी रूप कठ छे, तें ता भुतज्ञानता
 मान न कियो भुतज्ञानजीरो, गुणनो न कियो, तें सा
 ज्ञानावधिरो, अन्धकार पड़ल फिर गयो, भुतज्ञानजी
 आराधन करे छे, भुतज्ञाननी रो बहुत मान कर छे, ज्ञान
 ज्ञान दर्शन, चारित्र निर्मल होवे छे, निकाशे ज्ञान
 प्राप्ति हाव छे, जिकरि रे ज्ञान दर्शन, केवल रीं प्राप्ति
 है, निकाई रे सुख रूपीणि श्री पाणिग्रह्य हाव
 ॥ दुहा ॥ दिवस प्रते दिये कोई तू जाण, सोना खर
 लक्ष्य प्रमाण । तेहने पुण्य न होवे, जेतलो, सामाय
 किधाफल तेतलो ॥ १ ॥ पिय तू चेतन इय मत
 भूले मा, आ धारी सामायिक उवा नहीं भाई, आ
 सामायक तो ऊचम जीवारी, भाई आ सामायक, भाय
 कामदेव सख, पुष्कलरी पूरयदास शेठ, चदावतम
 राजारी, तू इये मरोसे भूले मा, रे चेतन धारी तो साम
 यिक आ छे ॥ दुहा ॥ काम काज घरना चितव, नि
 विरथा कर स्तिन रहे । आरत रुद्र, ध्यान मन धर,
 सामायिक निष्कल करे ॥ २ ॥ धारी तो सामायिक
 मार्, और सामायिक रा ए लक्ष्य छे ॥ दुहा ॥ आ

परायो सरियो गिरे, कचन पत्थर समरुद्ध घर, माया
 बोहो गमतो भये, ते सामायिक शुद्धे करे ॥ १ ॥
 चट्टावतमक गता जेह सामायिक वस्तु पाव्या तह, रे
 चेतन, स्वआमाना मलो चाह, पर आमानो भुगे चाहे, मो
 ते पर आमाने भुगे न चाह्या, स्वआत्माने दिन भुगे चाह्यो,
 रे चेतन तू कचन री तो बाण्ड्या राखे, पत्थर ने दूर कर,
 थारे छाति उपर पत्थर पढमि, वडेइ कचन री प्राप्ति शुभी
 नहीं, रे चेतन तू तो मृषादा बोत रखो छे, रे चेतन तू
 तो धारो गुण सभाले ता अविदि छे, अकरसि छे अयासि
 छे, अलेसि छे, अविनाशी छे, जे तू धारा गुण सभाने तो
 छे भाई, अहो ए म्हाता दुग्मन, ए म्हाता सज्जन, दुग्म
 धारा दुरमन, दुग्म धारा सज्जन, ह चेतन थारे तो आठ
 कर्म रूपीया शत्रु बैरी छे, ग्याने तू ज्ञान रूपीये ग्यय्य
 बाल भस्म करे, गु धारी आमागी सरन मरे, ओहो, ह
 मय्य छु के अमय्य छु के दुर्भय्य छु, के को म्हा
 पोते नसार बया दिज दीश छे, प्राय तो ह भाई अभय्य
 ही दीश छु, पछ तो ज्ञानिया भाव दिहो तो खग, न
 चेतन, तू सामायिक तो आ करे छे, रुख रान मोढे
 कटका, उपठयां लव घरडका, थारी ममायिक तो भाया
 ज्ञानि सकारमि तो लख लागमी ॥ दुहा ॥ आत्मनि
 आपसी, ज्ञान सार सुनि बीन, जे आत्म निदा कर सो
 नर भुगुन प्रवीन ।

गति ओ आत्मनिन्ता ममूगोम् ॥

आत्मनिन्दा का लुप्त ।



हे प्रभु, हे प्रभु, शु कहु दिनानाथ दयाल ।
 मैं तो दोष अनत का, मावन हु करणाल ॥
 शुद्ध भाव मुचन नहीं, नहीं सर्व तुव रूप ।
 नाहि लज्जता अरुदीनता, क्या कहु परम स्वरूप ॥
 नहीं आत्मा गुरुदेव की, अगल कीमी उरमाहि ।
 आपनला आधार है, यह परमादर नाथ ॥
 जगल बल्ला मुरत हा, दीन बन्नु दीनानाथ ।
 पापी परम अनाथ हु, ग्रहा प्रभुनी हाथ ॥
 अनत काल म आयडीयो, बिना भान भगवान ।
 सम्या नहीं सत चरण का, मुखु नहीं अभिमान ॥
 सत चरण अगल बिना, साधन रियो अनर ।
 पावन उम म पामीयो, उग्यो न अम रिमेक ॥ ,
 मर माचन बधन भये, रक्षा न कोई उपाय ।
 सतमाचन समभया नहीं, तब बधन रिया जाय ॥
 प्रभु प्रभु ल लागी नहीं, पन्थो न सतगुरु पाय ।
 लिटा नहीं निज दास तब, निरु में कौन उपाय ॥
 अग्रमाचन अधिकोअधिक, सरन जगत में हु ।
 यह निश्चय आया बँनु, साधन करम गु ॥
 पड़ी पड़ी तुव-वत् पकने, फिर फिर मागु छंद ।
 मरमरमर तुव, यह दृढ़ता करी नद ॥

शिक्षा का श्री र्णम घोल लि-यते ।



- १ पर द्रव्य की प्रयोग इच्छा करना न चाहिए
- २ किनी भी प्रार्थी का घुरा न बिचरना
- ३ कोई भी अमय बात मय तरीकै आग्रना नहीं
- ४ किनी भी गन्ध का दिल में न होरे ऐसा कहु
बचन कहना नहीं
- ५ अपने पर इनकार होवे, सलाह पुछे तब कीमी को
सोटी मलाह देना नहीं
- ६ पर निन्दा करनी नहीं
- ७ बिना प्रयोजन गया भागकर समय फुल गमाना
नहीं
- ८ गोर दी हुई चीन लोभ से या अन्याय से ग्रहण
करणी नहीं
- ९ किनी भी जीव की हिंसा करणी नहा
- १० पराई सा के माथ अयोग्य चरताव में चलना नहीं
- ११ मनको स्थिर रखना चाहिए

-
- १२ पाँचों इन्द्रियों को चर में रमो
 १३ हा सरा से सय बोलना चादिष
 १४ अपन उपर कोई अपराध करे तब क्षमा करती
 और करण में माफी देनी
 १५ दीन प्रति शक्यनुसार दुष्ट दात करना
 १६ दया का कोई अच्छा कार्य सब उत्तर फाला
 १७ देव शुद्ध धर्म की भक्ति करना और पढ़ा का निरत
 करना
 १८ मन बचन बापा में शुद्धता रखनी
 १९ ज्ञान भीगन में प्रत्येक दिन चारों पन टम नीका
 लक्षी
 २० जगत के सब जीव का कल्याण हा जमी शुभ मार्ग
 प्रति दिन मावशी
-

अथ पारह भावना लिख्यते ।

१ अनित्य भावना ।

ऐसा विचार करे कि इस जगत् में ग्राम, नगर, पुर, पैठाण, कौल, झरने, दाग बगीचे, निवाय, मेइल, हवेली, दुकान, मनुष्य बुट्टर परिवार, न्यायि, गोती, घन धाय, आभूषण त्रियंगणि सर्व वस्तु अनित्य अस्तित्व है, परन्तु है जीव तू मूर्खों ने इस को नित्य शम्भुनि मान बैठा है पर दुष्टों ने गरीब की गोमा बना के सुजी मानना है, सो यह गोमा दही पकती रहने वाली नही है, ऐसी अनित्य भावना, श्री मन्तेसर चक्रवर्ती ने भाई थी ॥१॥

२ अजरण भावना ।

ऐसा विचार करे कि रे जीव इस जगत् में तेरे को मरणा आघात का देने वाला कोई नहीं है सर्व स्वजन स्वार्थ के समे है, जब तेरे अशुभ कर्म का उदय होयगा और तेरे पर तू ही आपक पड़ेगा तब तुझको सहायक कोई भी नहीं होगा, ऐसी भावना अनाथि निग्रन्थि भाई थी ॥ २ ॥

३ ससार भावना ।

ऐसा विचार करे कि रे जीव तू अनन्त जन्म का सर्व गणत में निग, बालाग्रह विना भी तू

खाली नहीं रखा। मरने जीवों के साथ सगपथ सम्बन्ध चुना, माता मर के स्त्री, स्त्री मर के माता, पिता व पुत्र और पुत्र के पिता, धर्म आपस में अनति वस्त्र सम्बन्ध बना गया है। मरने जगतगामी जीव स्वप्न है परन्तु शरीर कोई नहीं है, इस लिये मरने के साथ तू मित्रता रखना भावना मल्लिनाथजी के मित्र ने तथा ध्याना, शान्तिभक्त ने भाई थी ॥ ३ ॥

४ एकल्य भावना ।

ऐसा विचार करे कि रे जीव इस जगत में कोई किमी का सोचती नहीं है, अकेला आया और अकेला ही जायगा जो पाप करके तन धन, कुदुम्य का संग्रह किया है मरनेगा जब धन धरती में, पशु घर में रह जायगा और स्त्री दरवाजे तक, कुदुम्य स्मशान तर ही जायगा, अन्य न्त प्रिय यह शरीर चिता अग्नि में जलके भस्म हो जायगा, ऐसा जाण त एकान्त पक्षा धारण कर। एकान्त भावना नमीगय गृहिणी ने भाई थी ॥ ५ ॥

५ परपथ अन्यत्र भावना ।

ऐसा विचार करे कि रे जीव इस जगत में मरने स्थायी मतलबी हैं उन का मतलब होता है वहां तक सव जीवी स्वमा २ करते हैं, हुक्म उठाते मानते हैं, मतलब पूरा हुए सब मज्जन दूर भाग जाते हैं परन्तु कोई किमी का नहीं होता है, ऐसी भावना मृगापुत्रजी ने भाई थी ॥ ५ ॥

२. अगुनि भावना ।

जैसा विचार कर रहे हैं और तब तब ही स्नात
 यजमानों में गुद धवन का ध्यान है, लेकिन यह शरीर
 अभी गुद नहीं होगा क्योंकि इस दो उपनि का जग
 विचार करने के लिए, कि अगुनि भावना का रस (लार्सी)
 और पिता का गुद (दीप) का आकार पर यह शरीर
 बना था अगुनि धिया क स्थान में इति पाकर रस के
 नाल में म बाहर परा और माता का दूध पीकर पदा
 हुआ, मा दूध भी जैसे रस लोरी माय शरीर में रहता है
 मैसा ही यह दूध है, और अभी अनान रहता है मा भी
 अगुनि व स्थान में पैदा होता है, और इस शरीर में मादे
 तीन छोड़ गेम है जिस में दो आद इरायन लाग गेम
 गले के नीचे और निम्नोप लाग गन व उपर है, और
 एक २ रोग में पाती दो दो गन माटर (पुद कम) और
 हुए है, जिस में भी अलन्ग भगन्गानिक मोहद रोग
 माट व (पद) पर हुए है इसी अगुनि अपरिणता ग
 और आधि ध्याधि रिता गेम उपनि काम पाप कर व
 यह शरीर पूरा मग है जहा तक पूरे पुण्य है, यहा तक
 सर्व अपरिणता मुर्ती हुई है इसे गोरी वाली चमड़ी टा
 गदी है, जब अशुभ पाप कर्म का उदय प्रगट होगेगा, त
 बिगड़ो किंचित भी देर नहीं लगेगी ऐसी भावना मन
 हुआ अगुनीनी ने भाई भी ॥ २ ॥

पाली नहीं रखा। मर नीचा क माय मगपन ममय म
 चुवा, माना मर क म्या स्त्री मर क माना पिता क पु
 और पुत्र क पिता, एम आपन म अनति तन ममय म
 गया है। मर जगतनामी जान मयन ह पन्तु म
 कोई नहीं है, इम निय मर क मय न मिया म एम
 भावना मलिनायनी क मिया न तथा ता शानभट्ट
 ने भाई थी ॥ ३ ॥

४ एकन्य भावना ।

एमा विचार कर कि र नीर म जगत म म किम क
 मोक्षनी नहीं है, अकला म ॥ मर प्रकला । नायगा,
 जो पाप करके तन धन क दुम्ब का मयन दिना ह मा
 मरगा नन धन धनी म पग धर म म नायगा म
 मी दरगाज तक दुम्ब ममान तक म मयगा म
 न्त प्रिय यह शरार मिया अग्नि म जलक मम म
 जायगा, एमा चाल म एकान्त मया मम मर म
 एकान्त भावना नमीगय गावना म म ॥ ४ ॥

५ परपत्य अन्त्यन्य भावना ।

एमा विचार कर कि र नीर म जगत म मर
 म्यारी मतलबी हैं उन का मतलब हाता ह मर मर
 जीनी ममा २ करत हैं दुम्ब उठात माना ह मतलब म
 हुए मर मजन दूर माग जात हैं पन्तु का म म म
 नहीं होता है, एमी भावना मगापुत्रना न भावनी ॥ ५ ॥

७ आश्रय भावना ।

ऐसा विचार कि है जीव, तब अनन्त समार परिश्रम का क्रिया उम का मुख्य हेतु आश्रय ही है, क्योंकि पाप ता हम जीव ने अनन्त वर छोड़ा परन्तु आश्रय छोड़ दिने, धम्म पूर्ण फल नहीं द मरना आश्रय दीम प्रसार क है परन्तु यहा मुख्य म अद्वय रा अर्थान् भोग उपमान अर्थान् जा एक रत्न भागन में आर वैम आहार पारि प्रमुख, परिभोग चो एक वस्तु बार बार भाग में आर, वैम वस्त्र, भूषण, प्रमुख और भी धन वान्य भूमि इत्यादिक का मर्यादा नहीं करना (इच्छाका निराप नहा करता) मो ही आश्रय, नम भव में महा तृप्ता रूप सागर में गोते लि लाता है, और अगाढा परभर म दुर्गति म अनन्त काल निडम्यता (दु ग) देने वाला होता है, एमा जाण हे पीव, अब तो आश्रय छोड़ और वृत्त अर्गीकार चक्र कर, यह भावना समुद्रपालनी ने भाई थी ॥ ७ ॥

८ सत्वर भावना ।

ऐसा विचार करे कि हे जीव समार में रुलाने, वाला आश्रय है जिसको रोकने का उपाय एक सत्वर ही है, इस लिये अब तो कायिक (कायामे) वाचिक (वचन से) मानसिक (मन से) इनकी इच्छा को रुधन कर एकान्त म मता रूप धर्म में लीन हो, अर्थान् जीव रूप तलाव में अद्वय रूप नाने से, कर्म रूप पारपी आ रहा है, उमका

स्थल दाता है तैसा एक गनु की चौड़ी और चउद गनु
 की लम्बी एक ऐसी उप नाल है उसके अन्दर प्रम और
 स्थान नीर शामिन भरे हुये है और इसके बाहिर राई
 मर लाक में स्थानर जीव ही रीसो रीस भरे हुये है ता
 हे नीर, तू अना उर म लोक के विषे प्रम स्थानर पण,
 सूदन पानर पण मन्नि प्रमनि पण, प्रजापता अप्रजाता पण,
 नार्की तीप-पण, मनुष्य दरतापण, जम मरण करक मा
 लोक कम्मलिया, एमी कोई तागा लोक के अन्तर नहीं
 रही क विम जगह तू प्रम मरण नहीं किया होय, अपात्र
 एक गलाग्रह गय उननी जगह लोक के अन्दर स्थानी नहीं
 रहीं, ऐमा जाग कर ह नीर, अब ता ऐमी जगह देखने का
 इच्छा कर क जहा जम मरणा कष्ट की उपनि न होय, और
 पुनर्गमि ममार मागर में परिभ्रमण करने का काम नहीं
 पड़े ऐमा स्था कदा है कि लोर क अग्रह भाग के उर
 अपात्र मरार्थ मिद्ध विमान म बाग्रह जोजन उरर छाया
 लिम सान्य ज्ञान का पूण चट्टाकार गोल और छायाकार
 मध्य में, आठ पावन की जाड़ी और आत्मगी किनार
 पर मरिका के पण ॥ १० ॥ एतन्नी मरमनवत्त विहनी
 केटन मुसदमय मरने एमी मिद्ध जिना है, जहां एक
 काम के अरु माग के उरर आग मिद्ध भगदा सिता
 है, इतन्नि दान ता की तू म उरर कर और ज्ञान
 दान, धर्म, तप अर्गाकार करन का उदन कर ता का
 हुये मरन तर क नीर निर तागा मर धरना जि
 मर अर्गरी ॥ १० ॥ ॥

धर्म कर, धर्म तो इस ससार में बढ़ते प्रकार से लोकमान बैठे हैं परन्तु सच्चा धर्म का मर्म (स्वरूप) कुछ नहीं समझते हैं फल अपना ० मत पक्ष ताएते हैं इसलिये सच्चा धर्म वोही है कि जिस धर्म में जिमी जीव का मन, बचन, काया करके मिलकुल तल्लीन नहीं देते हैं अर्थात् अहिंसा परमोधर्म इति उच्यते नहीं दिया है, मा ही परम उच्छिष्ट धर्म है इसलिये दयाधर्म अंगीकार का यह भावना धर्मरूपि मुनिजी ने भाई थी ॥ १० ॥

इति नारद भावना सम्पूर्णम् ।

भावना का हरिगीत छंद ।

हु नमो भीतरागने, भीतराग पदने आपनो ।
 राग द्वेष नष्ट धरने, परम तन प्रकाशना ॥
 लोक रचीनो त्याग करीन, शुद्ध माग आदर ।
 दुष्ट कर्मो नष्ट करी, आनन्द न बगो वर ॥
 कल्याण थाप्नो सर्वेणु, परहितमां तत्पर रह ।
 दोन सर्वे नाश पावो, सहु लोकनु कुशल चहु ॥
 ज्ञान दर्शन चरण गुण, आराधना प्रेम रहा ।
 अदोनिश ए प्रभु भावना हरिदामनी बेगे बहा ॥

ଆମ ଘର ବାସୀ ଏ ଦୁର୍ଘଟ ବାବଦ ଏହି ବିବରଣୀ ।

॥ गङ्गा नमः ॥

ज्ञानापरिणतं चर्मं मानं प्रजासु जायते ।

१ शान्तद्वेष के शान्तविराग का, २ सुदय की शान्तविराग
को, ३ शान्त विषय शान्त का, ४ सुशान्त की का शान्त
शान्तविराग की शान्त का, ५ शान्त का शान्त उपाय,
६ शान्त का शान्त, ७ शान्त शान्त का शान्त
को शान्त शान्तविराग के शान्त ॥ १ ॥

दत्ता दशनामस्मिन् धर्म दत्ता प्रसादे वाधि ।

१ दृश्य, २ दृगुर, तीनाथाय, ३ दृष्य, ४ दृग्मात्र
की प्रतीति करो, ५ धर्म निमित्त दिगा कर, ६ विध्या वृद्धि
रागे ७ विना अधिष कर, ८ गम्यवन में दोष लगाय,
९ विध्याप्रसाद धाम्य करो, १० अंतर्गत अन्वयी का
रूपण करो तो दर्शनार्थिष कर्म बाध ।

मीनारा शाखा विद्वानि वर्म अष्टवे प्रवारे पांथ ।

१ दया, २ दाता, ३ दया, ४ दल-भार्य, ५, स्त्री, ६
 इन्द्रिमा, ७ मन्त्र, ८ ज्ञान, ९ अग्नि, १० पद, ११
 शास्त्रविचार, १२ मन्त्रोप, १३ अनुपपत्ति, १४ साय पवन,
 यद चतुः काम कर्मे मे मागावेऽपि कर्म माधे ।

पञ्चर प्रकारे अशाना घेदनीय पापे ।

१ जीसों का घात करे, २ जीसों का छेदन करे, ३ जीसों का मर्दन करे, ४ जीसों को परीक्षा करे, ५ पुत्रता करे, ६ परको दुःख देवे, ७ श्राव देवे, ८ आक्रमण करे, ९ स्वतः शोक दुःख करे, १० द्रोह करे या थापन अनेके, ११ अमृत्यु पाल १२ रैर रिशेय करे, १३ युद्ध भाव करार, १४ काय मान उपनारे, १५ परनिंदा करे, ता अमाता घेदनीय कर्म पापे ।

चौथा मोहनीय कर्म ६ प्रकारे पापे ।

१ अरिहन्त की निंदा करे, २ अरिहन्त के उचन शाय की निंदा कर, ३ चैन बम्म की निंदा करे, ४ महागुरु की निंदा करे, ५ उत्पन्न प्ररूप, ६ कूमाग प्रकारे मो माहनी कर्म पापे ।

पापवा आयुष्य कर्म, देवता का आयुष्य वश प्रकारे पापे ।

१ अन्य उपाय २ निमल सम्भार, ३ शुद्ध धारक धर्म पाल, ४ मृत्यु और गत वस्तु का शोक न कर, ५ धर्मार्त्ता की भक्ति कर, ६ दयानिदान की सदा श्रुति कर, ७ चैन धर्म का रागी, ८ शान तरसी, ९ अकाम निर्वा करे १० शुद्ध माधु धर्म पाले मो देव होये ।

मनुष्य का आयुष्य नव प्रकारे पाये ।

१ देखु की मर्तिन करे, २ जीवों पर दया करे,
३ गाम्ग्रह पढ़ावे, ४ न्याय मार्गें जानी उपार्जे, ५ उग्राम
प्रणाम में जान देवे, ६ निग नहा करे, ७ परउपहार करे,
८ निर्मी को पीड़ा न उपजारे, ९ आश्रमन कर या गमन
प्रणाम में मना करें, या मनुष्य मर के पीछा मनुष्य होव ।

तीर्थन गमिका आयुष्य बीस प्रकारे पाये ।

१ जीन भग करे २ टगाई करे, ३ मिथ्या कर्म ममा
करे, ४ वृषदेग करे, ५ तोल माप गोटि गये, ६ दगाबाजी
करे, ७ भूडवाल, ८ भूटी गाय मारे, ९ अर्घ्या वस्तु में बुरी
वस्तु मिलावे, १० वस्तु का रूप पलट क बेचे, ११ पशु का
रूप पलट के बेचे, १२ उगार वस्तु पे भोल चढ़ा क बेचे,
१३ बलेश करे, १४ निदा करे, १५ चोरी करे, १६ अयोग्य
काम करे, १७ वृष्णलेम्बा वाला, १८ नील लेम्बा वाला,
१९ कापोनलेम्बा वाला, २० आर्तभ्यान ध्यारे, सो तीर्थन
होव ।

नरक का आयुष्य बीस प्रकारे पाये ।

१ अति लोभ करे, २ मदमच्छर बहून करे, ३ क्रोध
बहून करे, ४ मिथ्या कर्म ममाचरे, ५ पचांड का का
करे, ६ अति अमप बोले, ७ चोरी करे, ८ व्यभिचार मेरे,
९ काम माग में अति रुहारे, १० ममभ्यान भेदे, ११ पचांड

क विषय में लुब्ध हाव, १२ सप की जाने चतुर्विध मंत्र की पान करे, १३ तिन गान उच्चाये, १४ तीर्थंकर के मार्ग की प्रतिष्ठा घटाव, १५ मदिरा पान करे, १६ माम मढ़ा कर, १७ गरी मोचन कर, १८ कद मूल भरण कर, १९ रौद्र ध्यान ध्याये, २० दृग्गादि तीन शेरया विराज ध्याये तो नगर में गार ।

द्विहा नामकर्म, ऊच नाम तीन प्रकारे पाये ।

१ श्री जैन धम्म में रज हावे, २ दया दानरी हाव, ३ धृति की अभिलाषा वाला हाव तो उर नाम होव ।

तीण नाम कर्म आठ प्रकारे पाये ।

१ मिथ्या उपदेश कर २ कूमार्ग प्रवण कर, ३ आप दान दर नदी, दूसर का देने देवे नदी, ४ क्यार अमय करन वाल, ५ माहा आरम कर, ६ पगनिदा कर, ७ मरे जीरी व द्राह कर, ८ मच्छर प्रणाम धाण्य कर नीच कर्म बार ।

मानना गोत्रकर्म, सोसह प्रकार ऊच गोत्र बधि ।

१ मण्यनरी, २ शिष्या, ३ जीवरन, ४ अदण मद्रन्, ५ पदगति, गान करे, ६ मग्न मयाति, ७ मयंसर की मक्ति कर, ८ अण्णारे की मक्ति कर, ९ दान्यार की मक्ति कर, १० मातृ की मक्ति कर ।

११ चतुर्भुजानिनागम की भक्ति कर, १२ उत्तम का दाम बना रहे, १३ अनेकान्तनैनधर्म आदरे, १४ उभयटकप्रति प्रमण करे, १५ अनर्थ पाप से बचे, १६ साधर्मी की बत्तलदा करे तो सीर्थकरादि ऊँच गोत्र पावे ।

पाच प्रकारे नीच गोत्र पाधे ।

१ प्रोधादि सीत्र कयाय करे, २ अन्यक गुण ढाँर, ३ निन्ना करे, चाहादी चुगली करे, ४ झूठी भाषि भरे, जीवहिमान्त्रि करे तो चाहाल आदि नीच गोत्र पाधे ।

आठमा अन्नराय कर्म अहारे प्रकारे पाधे ।

१ कल्याँ दया रहित, २ दीन जीमों को अतराय देवे, ३ अयमर्थ परकोष कर, अनेकान्ति गुरु की बदना निषेध करे, ४ निन मार्ग निषेध करे, ५ मिद्वान्त का अर्थ उत्पावे, ७ जैन धर्म कोई धारे तो विघ्न करे ८ शानी, गुणी की हेलना तथा आश्लातना करे, ९ स्रगार्थ पढ़ते अतराय देवे, १० दान न देवे और दमरे को देते निषेध करे, ११ धर्म कार्य में विघ्न करे, १२ धर्म कथा की हाँमि करे, १३ विपरीत उपदेश करे, १४ असत्य बोले, १५ अदत्त लेवे, १६ दान, लाम, भोग, उपभोग की अतराय देवे, १७ गुणी का गुण छिपावे, १८ अन्यका दोषण प्रकासे तो इच्छित वस्तु नहीं पावे, दुखि दालिद्रि होवे, ऐसा जाय अशुभ कर्म के बधन से आत्मा बचावे ।

इति कर्म बधन हेतु सम्पूर्णम् ।

अथ प्रहस्यार्थि विचार लिख्यते ।

माथा ।

अथ पउण पहरा ॥ १ ॥ पउण पहरा दुपय मद्धा
 तिह पएहि दा पउण ॥ १ ॥ पउण पहरा
 पय दम गुल पउण दुपय पउण पउण चउपय मद्धा,
 नञ्जा इगण पहरा दुगमाण ॥ २ ॥ मद्धा पउण निपयगुल,
 चउपहरा अठगल दुपय मद्धा पउण पउण दुग दुपय
 आनय ॥ ३ ॥ आमाण अठगुल पउण पउण पउण
 तिहि, पहरा अठि पउण पउण पउण पउण पउण पउण
 दुगमा ॥ ४ ॥ निपय चउपय पउण निपय गुल पउण,
 पहरा निपय, मत्त मद्धा चउपय पहरा दुगमाण ॥ ५ ॥
 मग्गे चउपय अठगुल पउण निपय, अठ गुल पउण मद्धा
 अठ पउण, पय पउण पउण पहरा दुग ॥ ६ ॥ पाम पउण
 दमगुल, चउपय पहराय, पाय चउण, दमिद्धा नय पाणहि,
 पहरा दुग पाय अठ ॥ ७ ॥ माहे चउपय, अठगुल पउ
 शो अठगुला निपय पहरा, मद्धा अठ पउण, पहरा पउण
 मद्धा पहरा दुग ॥ ८ ॥ पउण पउण चउपय पहरा,
 निपय चउगुले, माण्डि दमिद्धा पउण, मत्तपण पहरा दुग
 पाय चउण ॥ ९ ॥ चित्ते मासेवि तदा पउण निपय
 गुल पउण, पहरा निपणहि मद्धा अठगुल दुपहरा निपय
 ॥ १० ॥ यदमाह निपय, चउगुल, पउण अठगुले दुपय

पहरो, परपय पहर दविट्ठो, दुपपया दुपहरे भगिया
॥ ११ ॥ विट्ठि दममुल, दुपपहि, पउयो दुपय चउतुल
पहरो, चउपय मट्ठोनेउ, इगपाण पहर दुगमाय ॥ १२ ॥
पउयो पहरो जाणुच्छाया परहि नायन्वो, दविट्ठोय दुपहरो
तणुच्छाय पपहि जाणिचा ॥ १३ ॥

इति गाथा मत्तुम्मम् ।



क्र.सं.	वैद्य पोरुषाभा	पारुषाभा	हे पार	दत्त पार
१	ग्रामायण पग २ आगुल ६	पग २	पग ३	पग ३
२	धायण पग २ आगुल १०	पग २ आ० ४	पग ४	पग १
३	मात्र पग ३ आ गुल ४	पग २ आ० ८	पग ५	पग २
४	आसु पग ३ आ गुल ८	पग ३	पग ६	पग ३
५	कानि पग ४	पग ३ आ० ४	पग ७	पग ४
६	मीगसर पग ४ आगुल ८	पग ३ आ० ८	पग ८	पग ५
७	पौस पग ४ आ गुल १०	पग ४	पग ९	पग ६
८	माह पग ४ आ० ६	पग ३ आ० ८	पग ८	पग ५
९	कागुण पग ४	पग ३ आ० ४	पग ७	पग ४
१०	वेत्र पग ३ आ० ६	पग ३	पग ६	पग ३
११	वेसाम पग ३ आ० ४	पग २ आ० ८	पग ५	पग २
१२	ज्येष्ठ पग २ आ० १०	पग २ आ० ४	पग ४	पग १

प्रथम वर्तमान चौथीसी के तीर्थंकर गोत्र के कारण ।



१ भी आपमदेवजी न पद्मार्धराह के भद्र में महारि
देह क्षेत्र में पृत दान के प्रभावे तीर्थंकर गोत्र पापा ।

२ विमल बाहन राजा ने महारिदेह क्षेत्र में दीक्षा
ग्रहण कर रत्नावली रूप करी तीर्थंकर पद अतीतनाथनी
ने बान्वा ।

३ घातकी सहे ऐम्बल (अरत) क्षेत्र, विपुल बाहन
राना ने मध्यमे करी सुभरनाथजी तीर्थंकर हुये ।

४ जम्बुद्वीपे महारिदेह क्षेत्रे माहारल राजा ने दीक्षा
ली रत्नावली रूप करी अभिनन्दननी तीर्थंकर हुये ।

५ जम्बुद्वीपे महारिदेह क्षेत्रे, विनयमेन राजा ने दीक्षा
लेह वीगम्यानत्र मेरी, सुमतीनाथनी तीर्थंकर पद हुये ।

६ घातकी सुडे नदीमेन राना ने दीक्षा ली, प्ररघन
प्रभारना करी, पद्मप्रभु तीर्थंकर हुये ।

७ घातकी सुडे अपरागित राना ने वीमस्वानक मध्ये
किन्नराणक पद मेरी दीक्षा लेह सुपार्धनाथ तीर्थंकर हुये ।

८ घातकी सुडे पद्मराना दीक्षा लेह वैपायणादि
साधुनो करी चद्रप्रभु तीर्थंकर हुये ।

६ पुष्करवरद्वीपे महापद्मराजा दीक्षा लेइ कनकावला
तप करी सुनिधिनाथजी तीर्थकर हुवे ।

१० पुष्करादें पद्मोत्तर राजा दान शील तप दीक्षा
लेइ शिवलनाथजी तीर्थकर हुवे ।

११ पुष्करादें नलनीगुन्म राजा दीक्षा लेइ माहा
तपकरी भेषांमनी तीर्थकर हुवे ।

१२ पुष्करादें पद्मोत्तर राजा दिषायें लहने चारि
सेवना कर वामुपूज्यजी तीर्थकर हुवे ।

१३ घातकी खडे पद्मराजा साधुने निर्दोष दान दे
दीक्षा पारख कर विमलनाथजी तीर्थकर हुवे ।

१४ घातकी खड पद्मराजा तीर्थकर सेवायें करी
अनन्तनाथजी तीर्थकर हुवे ।

१५ घातकी खडे हृदय राजायें दिखालेइ तपस्यायें
करी धर्मनाथजी तीर्थकर पद हुवे ।

१६ महानिदेह मेघरथ राजायें पारिवानी दयायें करी
शांतिनाथजी तीर्थकर हुवे ।

१७ जमुद्वीपे सहन राजा अरुचय पाले तप तपी
विगम्यानक सेरी बुन्युनाथजी तीर्थकर हुवे ।

१८ महानिदेह धनजी राजा धर्मकरी भरनाथजी
तीर्थकर हुवे ।

१८ महाविदेह महाबल राजा बीम स्थानक सेवी
महिनायत्री हुवे ।

२० महाविदेह छत्र्येष्ट राजा हीरा लः तपस्याकरी
हुनि सुप्रवर्ती तीर्थंकर हुवे ।

२१ महाविदेह मिथाम्ब राजा विमम्बानक सेवी
नमिनायत्री तीर्थंकर हुवे ।

२२ महाविदेह शरु राजा जमोमति राणी हुनिराज
ने अन्न पाणी दानपी नेमिनायत्री तीर्थंकर हुवे ।

२३ महाविदेह अमरश्रुति सुपात्र दान पी पार्श्वनायत्री
तीर्थंकर हुवे ।

२४ महाविदेह नयमार ग्रामेन सुपात्र अटवीमाहे
साधु ने अन्न पाणी देइ भीमाहावीर स्वामि तीर्थंकर हुवे ।

इति वर्तमान चौबीसी प्रमुखम् ।

अथ मिथ्यात्व के भेदान्तर २१ श्रोत लिख्यते ।

१ अमिग्रह मिथ्यात्व ते अने प्यान में भार हो गीरा, अथापु अपना ही मन मान्या माने ।

२ अनमिग्रह मिथ्यात्व ते हम्प्रादी हो नहीं, परन्तु सत्य अमय का निश्चय नहीं कर सके, एर ही नहीं मान ।

३ अमिग्रह मिथ्यात्व अपणी सीरी टंक आवे नहीं ॥ ३ ॥

४ सगय मिथ्यात्व कामादाल रिक्त राणे, मरुत को, निश्चय नहीं लावे ।

५ अणामाग मिथ्यात्व अज्ञान वणा में सा, उपयोग मुन्य माने ।

६ लौकिक मिथ्यात्व के ४ भेद, (१) देवगत मिथ्यात्व बैरु मरानी इयाति दय माने, (२) गुल्मगत मिथ्यात्व गगामुक्त इत्यादि मुक्त माने, (३) धम्मगत मिथ्यात्व नहिं थादि स्नान में धम्म माने (४) परगत मिथ्यात्व होनी दशडेगदि परे माने ।

७ सत्तागत मिथ्यात्व का ४ भेद अर, मुक्त, पर, दार । अर अट्टक आप मनि, मुक्त निदय, धम्म दश दू, परे त्रिद कम्ममहिनि वा ज्ञान, दान, चारिद, सत्ता के त्रिद इन उपन क इम साद के गुणार्थ मन ।

८. कूप्रवचन मिथ्यात्व इन के ४ भेद हैं देवहरी हर, मन्नादि गुप्त, शरा जोड़ी आदि धर्म, स्नान, जप होम आदि, पर लोकीय कार्य माने वा उन के शायों को माने, या दृश्यजन मिथ्यात्व ।

९. उजो मिथ्यात्व भीरुनिगम प्रभु ने प्ररूपया परी तिनने मोदा प्रभे वा मोदा भेदे ।

१०. अधिको मिथ्यात्व थी वीतराग के प्ररूपया स्र से अधिक सरदहया वा प्ररूपया करे गो ।

११. विपरीत मिथ्यात्व थी मरायत माप्या अर्थ में विपरीत सरदहया वा प्ररूपया करे, मान नीन्दवनी परे ।

१२. धर्म को अधर्म मनमें, जैसे सत्य, दया, मूल धर्म भी मारातने परमाया उमको न माने सो मिथ्यात्व ।

१३. धर्म को धर्म समझे जैसे कन्या दान, व्रत होमादिक में गो मिथ्यात्व ।

१४. मायु को इमायु समझे सो मिथ्यात्व जैसे गुप्त सपुष्ट हानि दानि नपन्नि समारान्, बैरागी, धीतिन्नि, ऐसे उत्तम गुप्तों के धारक कृ दन वष करके देर बुद्धि सु ममायु समझे वा भेदे ।

१५. मनायु को मायु समझे सो मिथ्यात्व, जैसे प्राणानिवादादि, अद्भुत पादम्पानक भेदे, मेवावे, अनुनादे, दिन आत्रा मे, निस्पृह रनेने वानों को मायु भेदे ।

१६ जीव कु अनाद ममत्वे सो मिथ्यात्व, जैव
स्पर्श, प्राण, याग, उपशोभादिधारक, एकेन्द्रिआदि जीव
को अजीव ममत्वं या अद्व सो ।

१७ अजीव को जीव ममत्वे सो मिथ्यात्व, जैव
सुखा पाष्ट, निर्निव पापाण, वध इनको जीवका आका
बनाप उमे जीव अद्व सो ।

१८ मार्ग को उ-मार्ग ममत्वं सो मिथ्यात्व, जैव शुभ
निर्दोष, मरल, मय, मोक्षमार्ग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ता
दया, नील, दान, मतोष, धर्मा, इत्यादिक को कम्मरूपक,
संगार में एतान का मार्ग बनाप, दया दान उधार मा ।

१९ उन्माग को माग अद्व सो मिथ्यात्व, जैव
मातृव्यमन का सेवन, काम क्रीड़ा कम्पा, स्नान इत्यादि
संसार में परिभ्रमण कराने का जो मार्ग है, उनको माग
का हेतु अद्व सो ।

२० रूपा वदार्थ का अरूपा अद्व मा मिथ्यात्व,
जैव वायुकायादि सूक्ष्म हान म रश्मि न आर उनका
अरूपा अद्व मा मिथ्यात्व ।

२१ अरूपा को रूपा ममत्वे मा मिथ्यात्व, जैव
धर्मल्लिकायादि आ अरूपा है उनका रूपा अद्व मा ।

२२ अविनश्व मिथ्यात्व, त्रिनेश्वर तथा गुरु का
वचन उन्कारे शुद्धवन, ज्ञानवन, नवर्ष, वैशाख इत्यादि

उत्तम पुत्रों में कृपणीयता करे, छिद्र देगला रहे,
निर्गति अविनय करे सो मिथ्यात्व ।

२३ आशातना मिथ्यात्व, गुरु की ३३ आशातना का
राम करे सो मिथ्यात्व ।

२४ अविद्या मिथ्यात्व, तैमै प्रतीकमण्डिक विषा
न माने सो मिथ्यात्व ।

२५ अज्ञान मिथ्यात्व, जैमे मय शगव्य का विषेद
न होने से, समागिक कार्य पम्पों का बचन रूप जैसा का
तैसा रहने में और मत्य ज्ञान का अभाव में मिथ्यात्व
जीव सर्व अज्ञानि हैं कृत्कर्मे अज्ञान को घापे सो मिथ्यात्व ।

॥ इति नन्द्यम् ॥

अथ रात्रि तथा दिवस की आलोचना लिख्यते ।

॥ डोहा ॥

अनत सौधिमी पिन नहुं, मिट अर्नठा क्राइ ।
 केवल धानी गुणपग, बन्दु बे कर जोइ ॥
 दास क्राइ कवल घरा, बिहरमाय निनवात ।
 बहस युगल कोटी नहु, साधु नहु निरादिस ॥
 अरिहत मिद ममरु मदा, आचार्य उपाध्याय ।
 मातु मरुत के घरण में, पदु शिग नमाय ॥
 धन मातु धन माप्पी, धन श्री जैन धर्म ।
 त्रिम ममरपा मकट टल, डुटे आठों ही कम ॥
 सम्या सुभाया में सुम्या, सबे जीवाचार ।
 मिद मातु आलो वसु, मेरा बैर नहीं किम लार ॥

भाजनी चार पहर रात्री माहे तथा आचना चार पहर दिवस माहि जे में जीव विराध्या होय ते आलोउ, पृथ्विकाय, अप्यकाय, तेउकाय, पाउकाय, धनस्पतिकाय, श्रमकाय छ कायनी विराधना विधी होय, प्राणातिपाठ, मृतावाद, अदत्तादान, मैथुन, परीग्रह, रात्रिमोजने करी अत विषय अतिचार लाग्या होय, हास्य रति, अरति, मय, गोक, दगन्धा कियी होय, क्रोध, मान, माया लोभ, राग, द्वेष, मद मङ्गल अङ्कार क्रिया दास गन कथा, दश कथा,

की कृपा मोचन कथा, विधी होय, अहोरे पापभ्यानकनी
 सेवना मेवी होय, अदिगारव, रसगारव, साठागारव,
 सेव्या होय, माया शून्य, निआया शुभ्य, मिथ्यादसद
 राज्य विधा होय, छोटी चितवया, आतप्यान, गीतप्यान
 अशुभलेख्या प्याह होय, अपस्वप्न, दु स्वप्न दिहा होय,
 मान लाख पृथ्वीकाय, मात लाख अपकाय, सात लाख
 ठेठकाय, मान लाख बाउकाय, दश लाख प्रत्येक बनस्प
 तिकाय, चउदे लाख माधारय बनस्पतिकाय, दो लाख
 वेन्द्रि, दो लाख वेन्द्रि, दो लाख चउन्द्रीय अपार लाख
 देवता, चार लाख नागर्क, अपार लाख तीर्थ
 पञ्चेन्द्रि, चउदे लाख मनुष्य, एवं सर्वे पौराणी
 लाख जीराजोनि माह अस्तद्विष अचिराद्विष, तस्म मिच्छा
 मिदुक्कड, अहोरे लाख चौडम इवार एक सो सौ प्रकार
 मिच्छामिदुक्कड ॥ १ ॥

एक कौड साढ़े सठानेव लाख ॥१॥ कांही बात
 जीव ने मन बचन कायाण करी हएयो होय तस्म मिच्छा
 मि दुक्कड, दोम कौड चाहत्तर लाख सर्व जीवरी बात
 करी होय सो तस्म मिच्छामिदुक्कड, ज्ञान दर्शन, चारित्र,
 देव गुठ धर्म, धर्माचार्यजी की, माधुजी की, भार्याजी की
 उत्तम पुरुषा की, शास्त्र छत्र पाठ की, अर्थ परमार्थ की
 धर्म सम्बन्धि सकल पदार्थों की अदिनव अमलि आशा
 उन्नादिक किर्था हाय, अनेगी जो कोर परनिष्ठा सिधी होय,
 बगई होय, करते को अनुमोघा होय, ये सर्व मन बचन
 काया करी तस्म मिच्छामिदुक्कड, ज्ञान का चउदे,

समाहित का पाँच, बार घन का माठ, कम्पाजन का
 पसर, मंलेपली का पाँच ७ नक्षत्रों अतिगर माह ३
 कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अनागर जाया
 अजायना मन वदन कायाय की सेवा होय, मन्त्रा
 हाय, सेवता प्रये अनुमाया होय तो अनता मिह
 बेरलीनी गार तस्म मिच्छामिदुःख, एक २ बोल म
 भारत अनता अनता धान में छोड़ना योग्य बोल का
 छोड़ना नहीं थी मगरन्त महागज की आया ७ नक्षत्र
 आच्छा, विपरीत पक्ष प्रयतोया होय ते मन वदन काया
 व करी मिच्छामि दुःख ॥

इति आजायना मन्त्रम् ।

॥ दुःख ॥

गुनी पन को बन्धा, ओगल देन मयन्ध ।
 दुर्लभ दम बन्धा कर, मिह मा मयन्ध ॥

॥ दुःख (आगारी मन्त्रो) ॥

आगार गुनी उगति, पदगु वाप चडाव ।
 मन्त्र वापु ना वापि प्रीतु ना आगार ॥

अथ आयक के चार मग्ग लिख्यते ।

पाठ चत्तागि मग्ग, पवज्जामि, अग्निहन्ता मग्ग
परज्जामि, सिद्धा मग्ग परज्जामि, मादु मग्ग पव-
ज्जामि, केवल्लि पत्तनो धम्मा मग्ग परज्जामि ।

अर्थ - पहले तो मग्ग भी अग्निहन्ता भावनाही, अग्नि
हन्ता कैसे है कि उपस, विमल केवल जो की धूम
की पर प्रकाश का कण्डहार मिथ्या रूप विमि
(अन्धकार) का भेदगुहार, ममयज्ञ मदिन शुद्ध धम्म
का देनहार अनन्त नानि ई, अनन्त पारिव्य अनन्त लोचन,
अनन्त गुण की विगन्मान, अनन्त जीवना ग्लपान,
जगन्गु, जगन् जीवन, जगन् लोचन, परम आध्यात्मिक
(हरे कर्मेश्वर) आनन्द ना उपकारनहार, मोक्ष मार्ग ना
देखाइनहार, अमर्याद का देनहार, मरुत का देगुहार,
मन्त्रम जीवन्मुक्त ना देगुहार, जगन् ना मित्र, जगन्गुहर,
जैसे सभी मरुतमा विराजमान धने शुद्धगर्भ मेपनी परे
धर्मेना बचनों ने समर्थिने मरिच जीवन्मा मन्त्र ने
भाजता धम्म विचरे छे एहवा निर्विकारि जेवनी गान
मुद्रा जोडा की काम कोष सोन, अने मोहात्मिक अनादि
ना टोष मिटे, अन्तमा मरुती शैली शान्ते, मरे एम
विनि उदना दान्तवाक्य मरुत मुनि नन गेहवा एहवा
भी अग्निहन्ता भावना ना मग्ग पान एहवा, नान एहवा

विदेह क्षेत्र ने विषे, अनता अरिहत मगवत यश,
 अने हमणां महाविदेह क्षेत्र ने विषे बीम बिहरमान श्री
 इन्त मगवत और केवली मगवत मय्य जीवों ने तारा
 बिचरे छे, एहवा श्री अरिहत मगवतजी नुं पदिलु सगु
 पदिवज्जु छु ॥ इति प्रथम सरण ॥

अथ द्वितीय सरण श्री सिद्धमगवतजी का प्रारम्भ ।

श्री सिद्धमगवतजी इकतीस गुणोंकरी शास्वता
 सोमे छे, ते गुण कहे छे, पांच भेदे ज्ञाना वर्णिय कर्मना
 चयना करणहार, नव भेदे दर्शना वर्णिय कर्मना चयना
 करणहार, बेभेदे वेदनीय कर्मना चयना करणहार,
 बेहु भेदे मोहनिय कर्मना चय करणहार च्यार प्रकार
 आयु कर्मना चय ना करणहार, बेभेदे नाम कर्म
 ना चय करणहार, बेहुभेदे गोत्र कर्मना चय ना
 करणहार, पांच भेदे अतराय कर्म ना चय ना करणहार,
 बली घणां अतिशय करी विराजमान ते अतिशय कहिये
 द्विये, ए दीहे, ए इस्मे, ए वड्डे, ए तमे, ए चौरमे, ए
 परिमटले, ए किन्हे, ए निघे, ए लोहिण, ए हलिरे,
 ए गुकिने, ए मुरहि गन्धि, ए दुरहि गधे, ए तीक्ष्णे,
 ए कडवे, ए कषायले, ए आंघिले, ए माधुरे, ए कफवे,
 ए मउए, ए लहु ए गरुण, ए सीए, ए उन्हे, ए मनिदे,
 ए लुफ्ते, ए रुये, ए नंगेदखे, ए अतिथि, ए पुरमे,
 ए नपुमके, ए माहे, ये चउदे भेदे पञ्चरे प्रकारे करी सिद्ध
 मान केवल ज्ञान, केवल दर्शन, चायिक ममाकित ना

परमहार, अनन्त अतिशय करी चिरानमान, मिद्वे, पुर
परपारगने, अत्र अमर अकल्प, अन्यावाध, निकल,
निराकार निरनन, अशरीरी जीव स्वरूपी निहां एक मिद्वे
तिहा अनन्ता मिद्वे लोकात्र भागने मिद्वे चिरानी रखा छे,
सर्व कर्म चकचूर करी गपावीने ध्यानानदय करी भरपूर
यका मोष नगरनु राज्य भोगे छे, अनन्तकाले, अनन्त
मोष पदुना हमया वर्तमान काले सरयाता मोष पदुच
छे, आगाधिक काले अनन्ता पदुचछे, पदया, अतीन्द्रिय,
अविनाशित्यनुपाधि, अविधि, अलंजि, अमूर्ति शुद्ध
चेतन्य ज्ञान दर्शन चारित्र्यादि अनन्त गुण मानन, मचिदा
नद स्वरूपी एहवा अनन्ता मिद्वे भावतनु सरणु पवि
षन्तु छु ॥ इति विजु सरणु ॥ २ ॥

हिचे तीजु सरणु माधु भगवतजी नु कहे छे ॥

माधु भगवतजी कहेवा छे, अनन्त ज्ञानि, अनन्त दर्शि
जपन्य दोष क्रोड, उच्छृष्टा नव भौद केवली, बली गणधर
आचार्य, उपाध्याय, बहुभुत द्वादशांगिना भयनहार
मति भुति, अविधि ज्ञानि, वैत्रिय लान्दिना पणी तपस्वी
भौदोटा महानुभाव, ज्ञानवन्त, दर्शनवन्त चारित्र्यवन्त
ज्ञान दर्शन का परमहार, बारे भेदे तप करी कर्म न
पय ना करणहार, इरिया ममिया भाषा ममिया एनल
ममिया, आयाए मड मतविस्तेरणा ममिया उन्चा
पामवरा मेल जल मषाल पागिटावलेया ममिया म

गुत्त वयगुन कायगुन गुत्तगुनान्दिया, गुत्तमयगारि, दीर
 कादा, जीवमाना जीवनाया जीव लोहा विनिर्ग
 नियपरिणदा, निय इन्दिया, जीविय मग्न मय विमुक्ता,
 अन्मय, अकृन्ना आमापदी पत्ता छेनामहिपता, नत्ताम
 १ पत्ता मन्वातदीपना बीनसुधि, काटसुद्धि, पत्तानुमागि
 मन बलिषा, वयबलिषा, दाव बलिषा, नाग्न बलिषा दमय
 बलिषा, चारित्र बलिषा, म्यात्तेमया, ष्टुमया, मयिमया
 अस्मीण माशमिया, नाग्न रिज्जाहागा, चन्द्र मयिषा,
 ऊर्ध्व मयिषा, अर्धम मयिषा, रगम मयिषा, द्वाग्न मयिषा,
 चठदश मयिषा, अर्धभागिया मामिया, दोमानीया,
 तीमानीया, चउमानीया, पचमामिया, छमामिया, ईन
 चरगा, पतचरगा, लुचचरगा समग्नचरगा, अन्त्राहागि,
 पतत्राहागि, अग्नत्राहागि, विरम आहागि, लुहत्राहागि,
 तुच्छत्राहागि, अननीरि, पन्तनीरि, लुहनीरी, तुच्छनीवी,
 उरसस्त्रीवी समत जीरी, आपविलिया, पुरिमहिग,
 पगामयेंया, नीमिगद्या, अमग्न जमग्न मामिग्नो नाहि,
 गामग्न भेद उदरा मून उत्तर, गुणना मेवनाग, माष
 मार्ग ता माषाग, भाव निग्रन्य, ममता रूपी शुभ
 ध्यानाग्नि, बडे कम रूपी काष्टने बालता, अनादि पारविन
 गितार परानिने वमनर, जेने नहीं माया, नहीं ममता,
 न्या २ तपस्त्रिया ना करणहार, चारित्र पालन रूप
 उदरगु वगी, ममार ममृष्ट न तरता शत्रु मित्र मम
 दष्टि उदरा माधु मगवनत्री लु गोत्रु मग्नु पदि चन्द्र वृ ॥
 इति तर्कव्य भाग्य ॥

गुत्त वयगुन कायगुत्त, गुत्तगुत्तन्दिया, गुत्तमवारि, जीव
 कोडा, जीपमाना जीपनाया, जीय लोडा निरनिदा
 नियपरिमदा, निय इन्दिया, जीनिय मग्ग भय विमुक्क,
 अमम्मा, अरुचना, आभोपद्दा पत्ता छेन्नामहिपता, जलाम
 दी पत्ता मन्वासहीपता, चीचसुवि, कोठ सुदि, पत्तानुमागमि
 मन बलिया, ययबलिया, पाय बलिया, नाय बलिया दमक
 बलिया, चारिय बलिया, मीरोमवा, म्हुमवा, मधिनव
 अक्कीण मायमिया, चारय विज्जाहारा, चउन्ध मीपरा,
 उद्ध भत्तिया अद्धम भत्तिया, दशम भत्तिया, द्वाय भत्तिया,
 चठदश भत्तिया, अद्धमागिया, मामिया, दोमार्मिया,
 तीमामिया, चउमानीया, पचमामिया, छमामिया, अत
 चरगा, पतचरगा, लुइयग्गा, ममदायचरगा, अतमाहारि,
 पतमाहारि, अन्नआहारि, विरम आहारि, लुइआहारि,
 तुच्छआहारि, अतर्नीवि, पन्तर्नीवि, लुइजीनी, तुच्छर्नीवी,
 उवसस्सनीरी पमत्त जीवी, आपचिलिया, पुरिमहिग,
 पगामणेया, नीपिगइया, अमग्ग जमग्ग मामिग्गा, नोदि
 गामरम भोइ प्दवा मूल उत्तर, गुणना सेरनारा, मोव
 मार्ग ना साधारा, भाय निग्रन्ध, समता रूपी शुभ
 ध्यानाग्नि, बडे कम रूपी काष्टने बालता, अनाग्नि परिधि
 मिमाय परधनिने पमत्ता, जेने नही माया, नही ममता,
 नही २ तपाग्नि ना करणहार, चारिय पालन रूप
 पददश जीरी, मयाग्ग मग्ग न नरता जनु मिथ मम
 दष्टि पदरा माधु भगवनजी नु तानु मग्ग पदि वज्जु कु ॥
 इति तृतीय मग्ग ॥

धन श्री घसोनी अखगार भगवान समीपे आइने
भगवानरी वारी सुरीने दिछा लइने गोचरी में अरस
निग्य विरम कागा बुद्धा नहीं बद्ध इमो अहार लेइने बेले
बेन पारवा करीने मवरिय मिट्ट विमान में पड़ुता, बाने
इहारी बदगा नमस्कार हुइनो ॥ ४ ॥

धन श्री एबना अखगार भगवान समीपे आइने भग-
वानरी वारी सुरीने दिछा लइने माधारे परिवार सु धडिले
गया पारी गे नालो देग्यो मारी गे पाल बांधी पावरी
किराई आओ देग्यो माधां मारी न्यार निरे छे साधा मन
में जाण्यो भगवान महारार व्यापी मुडी ने क्या कियो
पृथ्वी पारी आदि छद्मय जीरा न ओलखेइ नहीं साधू
टली अनगा नीकल गया मारकरडी (दौड़ कर) साधाने
पुगा भावानरे समोमरय में आया छे भगवान पुरमावे छे
प्रकृति इचरी भट्टिक छे इलुकर्म जीर छे इए मर मे ही
मोच जाने, इहारी बदगा नमस्कार होइजा ॥ ५ ॥

धन श्री अर्जुनमालीजी भगवान समीपे आइने भगवान
री वारी सुरी ने दिछा लइने राजप्रदी नगरी में मुद
परिधाने गोचरी उठ्या कोई माठा मारे, कोई सोटा मारे,
केइ कृषा लगावे, केइ पूड़ फेंके, केइ कइ मारो बार मायों,
केइ कइ इहारी मा मारी, केइ कइ मारो बेन (भगनो) मारी,
केइ कइ मारो माइ मायों, केइ कइ मारो मायां मारी,
केइ कइ मारो घरी मायों, केइ कइ मारो बेगो मायों,

महानुभाव वंदना ।

धन श्री आपभदवनी अनंत बल ग धनी काया न
कांयमी धन का पुण्या ने वग्मी तप चौविहार किया, हे
जीन, छमद्वीगे उपराग तुही चौविहार कर पाय कायागे
गात्र गम्भ, त्वाय हजार माघारे परिहार सु दिवा लीली,
दश हजार माघारे परिहार सुं छ दिनार मयार सु मुनि
पहुना पान म्हागे वंदना नमस्कार होयवो ॥ १ ॥

धन श्री महावीर स्वामी अनंत बल ग धनी काया न
कांयमी, धन उत्तम पुण्या न बार माग नेर पय चौविहार
किया, छ मागी चौविहार किया, पनमागी चौविहार किया,
चौमागी चौविहार किया, तीमागी चौविहार किया, दा
मगी, देद मागी, चौविहार किया, बहालर पय चौविहार
कीया, २७६ बना चौविहार किया, २ दिन मुनि परिहार
किया, २ दिन बनि परिहार किया, हमी नमस्कार करीन कर
महाजन दाव त्रिनांग मयाग करीन धारी गन माघ पहुना
बाने म्हागे वंदना नमस्कार होयवो ॥ २ ॥

धन श्री महावीर मौनम स्वामी गुमानन कीया, करीन
नमस्कार कर, दूर पदोय मकाय करे, तीने पदोय मौनमी
नमस्कार कर, ६ पदोय पानमा मागी ने चौविहारी नेदन गुन
मयाग नमद्वी नय करीन माघ वंदना, म्हागे वंदना नमस्कार
होयवो ॥ ३ ॥

घन श्री घघोनी अणुगार भगवान समीपे आइने भगवानरी बाणी सुणीने दिचा लइने गोचरी में भरस निग्य विरय कागा कृता नहीं चह् इमो अहार लेइने बेले बेले पारयो करीने मरिष मिट्ट विमान में पड़ता, बाने म्हारी पन्था नमस्कार हुइजो ॥ ४ ॥

घन श्री एवता अणुगार भगवान समीपे आइने भगवानरी बाणी सुणीने दिचा लइने माघारे परिवार गु धडिले गया पाणी रो नालो देग्यो मारी नी पाल बांधी पातरी दिगई आओ देग्यो साधा मारी न्याय तिरे छे साधा मन में जाएयो भगवान महारि स्वामी मुडी ने क्या कियो पृथ्वी पाणी आनि छकाय जीरा ने ओलएउ नहीं साधू टली अलगा नीकल गया मारकगडी (दौड़ कर) साधाने पुगा भगवानरे समोमरख में आया छे भगवान पुरमावे छे प्रकृति इयरी भटिक छे इलुकर्म जीय छे इय मय से ही मोद जामे, म्हारी पन्था नमस्कार होइजो ॥ ५ ॥

घन श्री अर्जुनमालीजी भगवान समीपे आइने भगवानरी बाणी सुणीने दिचा लइने राजग्रही नगरी में सुद परियामें गोचरी उठ्या कोई भाठा मारे, कोई सोटा मारे, केइ कृता लगावे, केइ घूड़ पेंके, केइ कहे म्हारो बाप मायों, केइ कहे म्हारी मा मारी, केइ कहे म्हारी बेन (भगनी) मारी, केइ कहे म्हारो भाइ मायों, केइ कहे म्हारी भाया मारी, केइ कहे म्हागे धणी मायों, केइ कहे म्हागे बेगो मायों,

अजुन मालीनी मन में चिन्ता करी है नीति, त पला
जायगी काया न्यागी न्यागी करी दीम दू तन धारा न
मनाये छुट्ठी नमा करान रत्न रत्न पागल श्रमहिना ना
किया गनगरी नगरी म अहार पारी कीरुही वेगया न
छ महिना में ही कम गपारा पनर निनाग मधारे कन
मोक्ष पहुँचा न्यागी चर्या नमस्कार हुँचा ॥ ६ ॥

धन श्री मधुमारजी भगवान ममीप आइने भगवान
री राणा मुर्गलि निचा लीना चउर इनार मुनिगञ्ज र
परिवार मु रात न मुना गनग मुनिगञ्ज काड ता मानग
परठण ने उठया काड गपारा गुरुखन उठया काइ नक
रो मेल पण्डितग न उठया ज्यु मधुमारजी र ठाकुरा
री लागी, मधुमारजी मन में गनग चिन्ता करी मनाइ
तो हु आरना भगवानर गमाप नर भगवान मयनी मयजी
कदकर पतलायता आन कीश मने मयला कदकर रतलायो
गहों में का भगवान रो राया नहा, पाया नहा लीयो नहीं,
दीयो नहीं, आरा पानग मुहपति नइन परभात म्हार परे
चामु, मधुमारजी भगवान रे ममोगरण में आया नर
भगवान मधुमारजी ने रतलाने आरो मेर आरो मय
गत तो तुम्हे दू रो दू रो काडी एर राति छ महिना नीमा
काडी, भगवान पुरबल भररो श्रुतात्त बनाया, हार्थारे भर
में मीमिपेगी न्या पाली, भोजि र गचारे गिध पर रेटा धया,
■ मधुमार निरचर भर में इतनी चर्या मही तरनु
दा वेदना ता सीजि है, मधुमारजी मन में चिन्ता

अनुन मानीनी मन में चितवता करी, हे चार, तें दण
 जीरारी तया न्यारी न्यारी करी दीम छे नन धारा ॥
 गतार अर्या नया करीन बल बल पागल अ मदिना का
 क्रिया राजप्रता नगरी म अर्या पारी सीगडी वेगदा करी
 अ मदिना में ही कम सपारी पनरं जिनाम मद्योगे का न
 मानि पदुता न्यारी रणना नमस्कार हुन्ते ॥ ६ ॥

धन श्री मधरमार्गी मगरान ममीप आन भगरन
 री राणा गुणा निमा लीनी, चउर हज्जार मुनिगरी
 पनियार मुगा । युता गारा मुनिगन का ता मगा
 पाटन १ उट्या, काड गैराग धुङ्गा उट्या काइ नाइ
 रा मेर पण्डितान १ उट्या, ज्यु मरणातरी १ गारा
 री लारी मरामार्गी मन म गारा चितवता करी मर
 ता अ आना मगरान ममीपे तय भगरान मरना मपी
 ककर बलवाना आर हीन मने मरना ककर बलवाना
 नडा म का नगरान ग गारा नडा, पीया नया, लाया नडा,
 पीया नडा, आरा पानग मरपनि अर पामान अर प
 जाम, मेरामार्गी मगरान रे ममीमगा में आया अर
 मगरान मेरामार्गी न रणार आरा मेर आरा न
 मर ता मुने द ग द म का । छर रावि अ मदिना रीन
 करी मगरान धुङ्गल अरग हुनात रणार, हाथी म
 म मी मेरि अर प की । छर मगरान मिय दार वेग अरा,
 ॥ मेरामार्गी मगरान ५१ में मदी बरना मरी मेरम
 दा रना म र री दे, मरामार्गी मर में चितवता

वर्गस्य मातुः पादौ दाय नमः ॥ मातुः कान्तु क्रूर वर्गस्य ॥
 शुद्धता नमः कर्म इमा लमा वर्गस्य विनय विमान गदा
 दान वर्गी पञ्चमा नमस्तुत दायका ॥ ७ ॥

धन धी सुखादुःखमा गान भवना निधनग विना
 गान भव मनुष्य ग विना गानकर तादा ग विना गान
 भव नैवनाग कमान सुख सुख भागदान हृदिन दधाम
 जीवाने ह्यही यन्मन नमस्तुत दातु ॥ ८ ॥

ଧନ ଧୀ ଅଧର୍ଯ୍ୟା ଧୈର୍ଯ୍ୟା ବାପା ଅପମର୍ଯ୍ୟା ଶାନ୍ତା
ମାୟା ଶାନ୍ତା ନାହିଁ, ହୃଦୟ ହୃଦୟ ବାପାଟି ମାୟା ଧନ
(ବାପା) ଦୟାବାଦ ବାପା ବାପା ଅଧର୍ଯ୍ୟା ବାପା ବାପା
ଧର୍ଯ୍ୟା ବାପା ଧର୍ଯ୍ୟା ଧୈର୍ଯ୍ୟା ନୟାବୀର ବାପା ॥ ୧ ॥

[illegible]

॥६॥ श्री, एतत्तु कृतं एतन्मया विदुः केश
वर्मा, हे विदुष्य मया एतन्मया एतन्मया एतन्मया

जाग्यो, ण्डीमु नगाइने चोटी नाइ खाल उतारी, मुनि मगस
ढास्यो नही, माथो धूँयो नही, नाके मल धान्या नही,
इमा ठुकर ठुकर पगिया मदिने केवल नान उपनाइन मुझे
पहुता चाने म्हारी चरणा नमस्कार होखो ॥ ११ ॥

षष्ठ श्रीकृष्ण महाराजरी आठ अग्र महिष्या, आपरा
ब१ १, गौरी २, गधारी ३, सखमणा ४, मममा ५, उबुली
६, मतमामा ७, रुक्मणी ८, आठों राण्यां आइन भगवान
समीपे हाथनोड मानमोड पूज्य भगवान ने नमस्कार करीन
चदन बाला पामे दीया लडने मन्म पालीने मुक्ति पहुँचा
बाने म्हारी चरणा नमस्कार होखो ॥ १२ ॥

षष्ठ श्री शेषिक महाराजरी दस अग्र महिष्या—कालि
१, मुकालि २, महाकालि ३, किन्हा ४, सुकिन्हा ५, महा
किन्हा ६, पीर किन्हा ७, रामकिन्हा ८, पीउमेण किन्हा ९,
महामेण किन्हा १० दसों राण्यां हाथनोड मानमोड पूज्य
भगवान समीपे आइने भगवान ने पूछ्यो कि अहो भगवान
काली आदि कुमारों, कोणक और चेडाराणा री लडार्यो
गया छै, जीत्या के हारया, भगवान पीछी फुरमाइ (लई
झूमठी चपलेरी डालि परे कमलाइने हेठे पढीया) दहु
करनि चेडाराजामार्यो दमुड राण्यां मुणीने कसो अ
भगवान माने ममाररे अलिते पलितेसु काटो, दसों राण्यां
मन्म देइने चदन बालाने मुच्या, चदन बालानी आइ
साने कर्नी आर्यो ग्वायनी तप अगीकार कयों, तुजी मु

कानी आर्या वनकायली तप किया, सीत्री महाकाली
 लपुर्मिह तप किया, चौथी किन्हा आर्या महामेन तप किया,
 पांचमी मुकिन्हा आर्या ने पिछुनी पडिया तप किया, छठी
 महा किन्हा आर्या ने लपु मर्वतोमड तप किया, सातमी
 शीर किन्हा शूद्र मर्वतोमड तप करीने विचर, आठमी राम
 किन्हा धद्र तर करीने विचरे, नवमी पीपुमेरा कन्हा सुक्ता
 वली तप करीने विचरे, दसमी महामेरा कन्हा आवेल शूद्र
 भाण तप करीने विचरे, इमी तपस्या करीने सुक्ति पट्टना,
 बाने म्हागी धदया नमस्कार होइओ ॥ १३ ॥

॥ गी मण्णप् ॥

अथ ममापि मरण बालों की २८ भावना लिख्यते ।

१ अथा दक्षिण इम पुट्टल पर्याय का स्वरूप कैसा विचित्र है अनन्त पुट्टल परमाणुओं इकट्ठा होकर यह शरीर बना है और दक्षत ही स्वतन्त्र विस्तार लगा, देखिये या कैसी विचित्रता है ।

२ अथा त्रिनन्द प्रभु आपक बान मय है कि अपुर अगामयमि, यह शरीर अपुर (अस्थिर) अगामय है (अनिय है) मा इतन त्रिन इम की पर्याय का पता होता था, उस का पूरा पता जान में नहीं लगता था अतः हम यह ही यह समझना हम आपक वार्यों का पूरा विधान हुआ ।

३ कैसा अनर मनुष्या के मिलन में मला (बाजरा) होता है और बहुत त्रिन स्वरूप (रस) होता है । जाता है नर को श्रुत्याग्न्य है । जाता है नम ही यह ममता रूप मन नदरा इम शरीर रूप मता अनर परमाणुओं का मरण से हुआ और विस्तारने लगा, इम में ममता क्या नुस्खाने का मम में कुछ इम पुट्टलनर नहीं है, मता (वैतन्य) इम ममता का इमन बाला नमोशरीर है ।

४ इम जगत में मम पर्याय अपन ४ परमाणु म विस्तार है, इम का क्या रूप पता नहीं है, इम अनर प

शरीर मेरे रखने में रहे नहीं, और बिखारने में बिखरे नहीं, जब मैं इसका वियोग होते क्यों चिन्ता कर जो होना होगा सो होगा ।

५ मैं (चतन्य) एक आयक स्वभाव मय, उम्मीका कर्ता, भोगता और अनुभवता हूँ तो आयक का स्वभाव अविनाशी है, उम्मीका किसी भी तरह नाश नहीं होता है शरीर रहा तो क्या और गया तो क्या, रहते और जाते मेरा स्वभाव तो एकसा ही है और एकसा ही रहेगा फिर शरीर के विनाश में चिन्ता का क्या कारण ।

६ हे विनेन्द्र, इतने दिन मैं जानता था कि यह शरीर मरा है परन्तु अब मुझे मन्त्र भाषण हुआ कि यह शरीर किनी का न हुआ और न होगा, जो मेरा होता तो मेरे हृदय में क्यों नहीं चलता, यह प्रत्यक्ष रोग, जरा और मृत्यु अवस्था को क्यों प्राप्त होता है ।

७ अरे भोले जीव, हम शरीर को माता, पिता, पुत्र बनावे, माई, भगनि, भ्रातृ बनावे, पुत्र, पुत्री, सासु बनावे, भाई और भर्त्ता बनावे, तु तेरा जाये, यह एक शरीर इतने का कैसे होवे ? जो होवे तो कोई इसका विनाश होने रख लेवे, हम लिये शरीर और बुद्धि कोई भी वेग नहीं है, तु सर्व से भिन्न चिदात्मक पदार्थ है ।

८ यह मम्मन तो जैसे इन्द्र जाल की मारत, बरत की छाया, स्वप्न गत, दुर्गम, काय, जैसा घग भगुर है, तु ५५ माह धरता (कर्ता) है ।

कर, अनेक शीत, ताप, छुषा, ठूपा, मोच रूप, लाभ उपार्जन को सहन करी, मो अब यह कान रूप तेनी भा मार आया है और मृत्यु मित्र तेरे माल के बल में तुझ इच्छित सुख देता है, मो तु अब इस देह पर ममत्व न कर, यह अनंत लाभ उपार्जने की वस्तु में लाभ लेल ।

१५ अपने किये हुये कृत्यों का फल तो मृत्यु ही देने वाला है, मृत्यु हुवे बिन, करणी का फल कैसे बिन, इस लिये मृत्यु मित्र मेरे ऊपर तो उपकार ही करता है, सु जाय ।

१५ जैस परचक्रि कोई किमी राजा को पकड़ पींजर में डाल रखे, खान पानादिक का अनेक दु ख होता है, और उस के कोई जबर मित्र राजा को इस बान की सहा मिलने से अपने मित्र राजा को शत्रु के ताबे में से छुड़ान कर सुखी करता है तैसे कर्मनामा शत्रु मुझे देहरूप पींजर में पाल कर, शोभोस्वाम, छुषा, ठूपा, ताड़न उर्वन रोग, शोक, दु ख, पराधीनता इत्यादि बदिखाना (काराग्रह) जैसा अनेक दु ख दिया, अब मृत्यु नामे मेरे परम मित्र की मेरे ऊपर परम कृपा हुई है, जिस से यह जेलखाने से छुषा मेरे को स्वर्ग मोच स्थान देवेगा ।

१६. समाधि मरण बिना स्वर्ग, मोच देने का हमारा इनिषा में कोई भी ममर्थ नहीं है ।

१७ जैसु भोग भूमि क मनुष्य जुगलिय का इच्छित
 मुख पुरने वाले और कल्प वृक्ष होते हैं कल्प वृक्ष का स्वभाव-
 है कि उन के नीचे बैठ सुभाद्युम जैसी वाञ्छा करे वैसे
 फल की प्राप्ति होती है, तैमे अपनी इच्छा पुरने वाला
 कल्पवृक्ष समान यह मृत्यु प्राप्त हुवा है, अब हम की छाया
 में बैठ कर जो अगुभ इच्छा विषय कपायादिक धारण
 करोगे तो नरक तीर्पचादिक अगुमगति प्राप्त होगी और
 सम समवेग त्याग व्रत, नियम, सत्य, शील, चमा, मतोप
 समाधि भाव का मेवन करोगे तो स्वर्ग मुख के भुजा हो,
 एक भव मे मोक्ष प्राप्त करोगे ।

१८ जरजरित अशुचि अपवित्र देह मे छुड़ाकर देव
 जैमा दिव्य रूप, मरण ही दे मफ्ता है ।

१९ जैमे मुनिराज अनेक नय, उपनय, प्रत्यक्ष,
 परोक्ष दृष्टान्तों मे शरीर का स्वरूप बताकर ममत्व दूर
 कराते हैं तैसे यह मेरे बदन मे रोग पैदा हुवा है सो मेरे
 को प्रत्यक्ष प्रमाण मे उपदेश करता है कि हे पुन्य, तू हम
 शरीर पर क्यों ममत्व करता है ? यह देह तेरी नहीं है,
 यह तो मेरे पति (काल) की मन्दा है ।

२० जहाँ तक इस शरीर में किमी प्रकार व्याधि न
 होय, वहाँ तक इस उपर से ममत्व न उतरे, और विशेष २
 इस का पोषण कर पुष्ट करे, यु पोषते २ ही जब रोग
 प्राप्त होता है और अनेक उपचार करो मोग नहीं निटता

है, तब इस देह उपर से स्वभाविक ही प्रेम कम हो जाता है, इस निये मुनीशान में भी ज्यादा उपदेशक, दई में ममत्व छानना वाला उपकारी मेरे ता रोग ही दुरा है ।

२१ रे तीर, इस भाग को देखा कर जो तु घरला होय, मरुच सुन जा गग तुम्ह गगय लगता होय, इस दूर में कयाना आना हाय ता बाय औपधियों का मेरन थोड़ क्योंकि यह गग कम्पारीन है, और औपधियों में कुछ कम्म को हटाने की शक्ति नहीं है, कदापि औपधि उपचार में छड़ा गेग मिट गया ता क्या हुआ, मिट रा ता संस्थाना अवस्थान रान में पीछा प्राप्त हो जाता है इस निर विनेन्द्र रूप मर रोग और मर शक्तिना क हाना महारैय की कम्माइ हुई समाधि मरण रूप महा औपधि का मवन कर कि विम में मर आधि, व्याधि, उपाधि का नाश हो, अजरामर अनन अक्षय अम्यादाय माध मुग मिले ।

२२ जा वेदना का उठार ज्यादा होय ता आय मन में ज्यादा मुर्गी होय कि जैम तीत्र नाप में मुरण शीत्र निर्बल होगा है, तैमे इस तीत्र वेदना में, मरे कम स्त्री मेंन शीत्र दूर होगा, ऐसा बिचार वेदनिय का दुग ममभाय मदन करे ।

२३ नरक में तेने पगवग पणे अनन वेदना मदन करि, पगनु चिन्नी निर्गम न हुई उननी निरगम अनि जा तु ममभाव रम कर मइगा ता तुम्ह होगी ।

२४ जो देनदार नम्रता में साहकार को मौ रूपों के बदले पीचइतर रूपों देकर फारसी मांगे तो मिल मर्ही है, और करवाई करे तो सवाये दाम देने से भी छुटकारा होना मुजिकल है तैमे इह कर्म रूप लेनदार लेना लेने सहे हैं तो तुं नम्रता से इन का देना चुका, फारसि लेन का प्रयत्न कर, फारसी से छुटकारा कर ।

२५ यह तो जरूर जाए कर्मों का कर्म दिया बिन मोक्ष कदापि नहीं मिलने की ।

२६ जैसे भार आने से निर्मान्य वस्तु को बेच कर बहिक महा लाभ प्राप्त करना है, तैमे ही जो स्वर्ग मोक्ष के अतीन्द्रिय सुख मुनी महाराज पांच महावृत्त, इन्द्रिय दमनादि, अनेक अप तप मयम करके प्राप्त करते हैं वो सुख प्राप्त करने का यह मृषु रूप अति उत्तम मौका (अमर) आया है, सो अब जरा समभाव धारण करजिम से स्वर्ग मोक्ष, सुख भोगा होये ।

२७ रे जीव, तैने इनने दिन जो घानादिक का भ म्याम किया है मो इस ममाधि मरण में सम परिणाम रखने के लिये है सो अब याद कर ।

२८ त्रिम वस्त्र को बापरते बहुत दिन हो जाता है, जिस से विशेष परिचय होता है, उस में स्वभाव से ही मोह कमी होता है, तैमे ही इस शरीर से जाण ।

इति भी २८ शुद्ध भावना सम्पूर्णम् ।

श्री पद्मावती री ढाल ।



ढोला ।

मोटी सती पद्मावती, लीनो सनम भार ।
अधिर ममार न जायके, छोट्या विषय विहार ॥१॥
विरह पढ्यो राधा तणो, सर्ती गई बन माय ।
पाप चितारे पादला, ते सुणनो चिच लाय ॥२॥

राग बेराड़ी । एद्रेयी ।

हवे राणी पद्मावती जीरराम खमाने जाणपणो जग
दोहिलो इण बेला जी आने ॥ १ ॥ ते मुन मिच्छामि दुकर ।
अरिहतनी साए जे में जीन विराधिया चोरासी लाख ॥२॥
ते मुज । सात लाख पृथ्वी कायना साते अपकाय सात
लाख तेउकायना, साते बली बाय ॥ ३ ॥ ते मुन ॥ दन
लाख प्रत्येक बनस्पति चरदे साधारण रितीय चउरिंदी
जीवना'बे बे लाख प्रकार ॥ ४ ॥ ते मुन ॥ देवता तिर्यं
नारकी च्यार च्यार प्रकासी चरदे लाख मनुषना एष लाख
चोरासी ॥ ५ ॥ ते मुन ॥ हिमा कीधी जीरनी बोन्धा
भूषावाद दोष अदचादानरा मैपुन उनमाद ॥६॥ ते मुज ॥
परिग्रह मेन्यो कारमो कीधो त्रोध विशेष मान माया लोभ
में कीया बली राग ने द्वेष ॥ ७ ॥ ते मुन ॥ कलह करी
लीब दूहन्धा दीषा कृग कलक निंघा कीधी पारकी रति

माम माग्य मय्या गात्र नदन मूल ॥ २१ ॥ ते मृत ॥
 गात्र मयाइ धानी पाली पणा उनीया आरभ कति
 अति पणा पोले पापज मया ॥ २२ ॥ त मृत ॥ इना
 कर्म तिया यी धर्म न दीया सुम माया रीगमना
 कृदा कायज पीना अया (कोराव दीया) ॥ २३ ॥ त
 मृत ॥ रिधी मय उग मया, गिताइ हया म सुड गिर
 तण मर में नु निग मरि ॥ २४ ॥ त मृत ॥ मड मृत न मर
 पल्लरी पीर नया पणा म मरिया पाद म रीर ॥ २५ ॥
 त मृत ॥ गांठण पीगण गात्रा तिया आर न अनर गीर
 इधण आगना तिया पाउ उदण ॥ २६ ॥ त मृत ॥ रिधी
 प्यार कीरी वी मया पार प्रपाद इग तिया पदा
 तिया रुदन रिगता ॥ २७ ॥ त मृत ॥ गात्र अन थार
 तणा मर लान मया मृत अन उतर तणा मरु दूरा
 माया ॥ २८ ॥ त मृत ॥ माय रिगु मि रीगता तिया न
 ममरी (शील) रिमर पीर नण मर रिगा कीरी मरि
 ॥ २९ ॥ ते मृत ॥ यगाइ दूरा पणा वरी मर
 गलाय्या रिगरी टाया पणा रीगता भवाया ॥ ३० ॥
 त मृत ॥ मंगण नाम में तिया पीर नरी गीरी
 रिगा कीरी जीरनी न्या न छापी ॥ ३१ ॥ त मृत ॥
 धवी न मर धरिया कया कदा ना रीग आगता नीर
 होया पण माइ माय्या मीर ॥ ३२ ॥ ते मृत ॥ रीर
 इना मर में तिया मरी वली न जार पीर आरभ तिया
 ॥ पालक मय ॥ ३३ ॥ त मृत ॥ रीर तिया

चारुणीया भरे घडीया दीप्ती उडाय पातरे (छेत्तरी) वस्तु
 मारी पणी पाप पूज्या आय ॥ ३४ ॥ ते मुन ॥ उनाले
 हल दारिद्रा यथान गाढा नीलण फूलस चारुणी घणी
 भूज्या नारो छे पाटा ॥ ३५ ॥ ते मुन ॥ गूनरना भर में
 क्रिया पाज्या पापाग भारा पाडीने बेलो छोटियो पाडाने
 जारा (पकड्या) ॥ ३६ ॥ ते मुन ॥ खानीना भव में
 क्रिया पाजा रग्य पटाया थोटा ने बली पखा मुळे दूषण
 लाया ॥ ३७ ॥ ते मुन ॥ हाथीना भर में क्रिया क्रिया
 रंगारा रोगान पडियारा माला पाटिया भारी तटर
 टाल ॥ ३८ ॥ ते मुन ॥ लोहारना भर में क्रिया पखा धरण
 घमाया कसी पुजाया पावटा रादम कटारी करया ॥ ३९ ॥
 ते मुन ॥ धामरना भर में क्रिया, क्रिया अखगल नीर
 स्नान जलक निमित्त भाखिया, लीया बर्नित दान ॥ ४० ॥
 ते मुन ॥ मर्तीने पुनरी कही कायरने युग बेज्याना दोउ
 टीरग पद्मा दोउ पख पुग ॥ ४१ ॥ ते मुन ॥ बनानना
 भर में क्रिया जूना नया कर बेज्या कूट कपट बेलज्या पखा
 पोले पापन मज्या ॥ ४२ ॥ ते मुन ॥ मराफी ना भर में
 क्रिया मेली कज्या आय (दौलत) चालखी पणी करावता
 घन पाज्यो न जाय ॥ ४३ ॥ ते मुन ॥ अत छाया आय
 दिय अचट्टने पने चान गोदा धाना उरिया मुन दान
 न भो ॥ ४४ ॥ ते मुन ॥ गेता उडाता देगता दिव
 निज भर जोय किनाल हातीने नरकी चरता नर बोय
 ॥ ४५ ॥ ते मुन ॥ नोर की हाटे हाटना गोदी मगर डा

काचा फल फूल चूटिया फोडी मरवर पाल ॥ ४६ ॥ ते मुत्र ॥
 भोषा मग्दाने भवे अण्डरुता नचाया बकरा भेमा बावडा
 दोमे भिम मराया ॥ ४७ ॥ ते मुत्र ॥ कायड इम टनेना
 रायल रान नचाया गमनरी नेण्या तगा केई चगित दि
 ग्याया ॥ ४८ ॥ ते मुत्र ॥ नायण धोरण में किया बाग
 बेम यणाया आरी में मुख जोड्या बट्ट डोष लगाया ॥ ४९ ॥
 ते मुत्र ॥ मुल्या धान दलारिया घरा घुण ममलाया इली
 दुर्मी अनि घसी पोते पाप कमाया ॥ ५० ॥ ते मुत्र ॥
 फडियाना भय में किया मुल्या धान निरुज्या लोभतगे
 यश परिग्रह कारन कोई न मर्या ॥ ५१ ॥ ते मुत्र ॥ पट्टवारा
 ग काम में घणा कमज योण्या धीचारी ने (मरमाइने या
 धीपाइने) भोलारिया छण माचा साध्या ॥ ५२ ॥ ते मुत्र ॥
 पेवार कीनो पमागीनगा घणी ओगटिया राखी जीरांत
 जवर (नाश) किया पणा कीकर रेमी नाकी ॥ ५३ ॥
 ते मुत्र ॥ गुड, लाड, नेल घृतना मिथन चोमामे कीना
 जीव हत्पा लागी घसी कम योग कीना ॥ ५४ ॥ ते मुत्र ॥
 रगरेपाना भय में किया, कसुवा रग्या अण्डाण्या पाखा
 टोलिया लोभनरी मग्वा ॥ ५५ ॥ ते मुत्र ॥ पाघरी न पर
 अण्ड वप्पा मय जीव महार रघिर माम मर्या रग्या करता
 मान अहार ॥ ५६ ॥ ते मुत्र ॥ टापी रग्या न मुत चारी
 चारी पाई मान जमन मविषा कृषादि कूड कमाड ॥ ५७ ॥
 ते मुत्र ॥ दाडना मय नेमिया और (आरल) मल अण
 इति गूट पायस ने चिदा गरिया मग्वा ॥ ५८ ॥ ते मुत्र ॥

पाग गिरी कुरुद कुले कीटक (कीटा) भविषा काव
 मारी जरा गिगेडला उदेई रडा रोड ॥ ५६ ॥ ते मुज ॥
 जखाम मर लाग लेंद बढ पापल बाटी पूर्य पाखी धोई
 ने अगन चढाई गाढी ॥ ६० ॥ ते मुन ॥ भील मेरा धोमी
 भवे लाया दर लाया मेरा गरद बाटिया उभाड गेगड
 गाया ॥ ६१ ॥ त मुन ॥ अमुग तरो नव उपना
 मुर्गी गाव मगरी परी पिरर पाटिया कर गिलोल
 करारी ॥ ६२ ॥ कगरी भर कम्पे किया केड रुठोता कराया
 मालर गूलर बढ काटिया पापे पेट मराया ॥ ६३ ॥ त मुज ॥
 कलाल कुनदा कुले दारु भट्ट चढाया मारी केरे कारणे
 केई रोप (पौंदे) रोवाया ॥ ६४ ॥ त मुन ॥ भाटा मिला-
 बढ भांतिपा केई भदिन कराया माडी ईटा कारणे केई चाव
 लगाया ॥ ६५ ॥ त मुन ॥ भेरु भरानी मानिया महारुद्र
 हनुमान् आठ मद एके बरी दीवा करमा दान (वलीदान)
 ॥ ६६ ॥ त मुज ॥ परी माला खोमिया भररा घर दाया
 मुन्या धान दलाविया पापे पिड मराया ॥ ६७ ॥ ते मुन ॥
 निदा कीर्पा साथ बी ख्या साथ मताया इगुरु रागे ला
 गने कर्म बहुला बघाया ॥ ६८ ॥ ते मुज ॥ रे रे कर्म किया
 कैमा पाव कीषा अपार ये दोष उठथ आविया भवे कुग
 अपार ॥ ६९ ॥ ते मुन ॥ मिद भगदत अर माधनो
 दिवे नग्यो दोज्यो भगदत नो भजन कीर्ति मूर साहमो
 जाग्यो ॥ ७० ॥ ते मुज ॥ ममरहि जीव ते मग्दमो मुगता
 समता आवे मारी कर्मो जीव ते मुगता दु मु पावे ॥ ७१ ॥

संक्षेपम् ।

अथर्ववेद मन्त्रानि यथाह्य नृणां आगच्छता
पादरागात् पुनर्नि, उच्चर पादराग भूतिना, पदः
ले नि, गमनात्पदे, पदिकमिने, दम्भात्कि मयाग मया
गने मन्त्रिक, मयाग इन्दने, पूर्व तथा उत्तर निमी
पारा नि आमन् दमी दमी न वग्या मपरिग्राह्य
मागमान् मन्त्र अन्ता नरिद्रु धर द्यामी, नमोभूय
अग्निनाम् मन्त्रात् पाद मयनाम्, एम अन्ता मिदनी
ने नमस्कार बान्, अन्ता वननान् तीर्थिन् न नमस्कार
दगन्, पाताना घमागाय न नमस्कार कर्त्तने, माधु प्रदुर
धार्त्तार्थ मन्त्रानि मन्त्र वीरगात् मन्त्रागेने, पूर्व ते मन्त्र
अन्ताया ह तन्ता व अन्तात् पाद साया हाय त मन्त्र
न अन्ता, पदिकमी निर्मी निग्न्य धन, मन्त्र पादात्
पाद पच्यामी, पच्यमीनाय पच्यमीना, मन्त्र अग्नि
नन्ता पच्यमीना, मन्त्रमन्त्र पच्यमीना मन्त्र पन्निगाह
पच्यमीना, मन्त्रकाह मात् पाद पिच्छा मन्त्र मन्त्र मन्त्र
अन्तात् पच्यमीना जावनीनाय, तर्त्तित तीर्थिहेय
न कर्त्तने नन्तामी वग्या पाद पादामि मन्त्रा वयमा
वापना धर अन्तर पाद म्यानक पच्यमीना मन्त्र अमन्त्र
पाद मन्त्र, मन्त्र, पच्यमीना आहार पच्यमीना जाव
दन्ता धन चार आहार पच्यमीने जीव इम सगीर इह

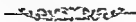
न भूय ॥ अथ अथर्व वेदायां यथा हि ॥ अथर्व वेदायां
 विहितं वि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अथर्व वेदायां यथा हि ॥ अथर्व वेदायां यथा हि ॥

कने, पीय मग्गुण मणाम धिक् विमामीय, ममय, मग्गु
 मय, बहूमय मग्गुण ममया गगण कग्गुमय, मासमीय,
 माण उन्म माण म्मुडा माण पियामा माण गाना, माण
 चारा माण म्मा माण ममग्गा माण वाहिय, पितिर,
 कप्पिय, ममीम मन्निगान्थि विविहागगायरा, पग्गिहा
 ऊमग्गा कामा फयन्ति एव पियरा चग्गुमी उम्मा
 निम्मा मही राभिगर्मा नरुद्ध एव गरीर रामराणि, का
 अणुवक्खमाण विहगर्मा एवरी मग्गुणा, पग्गुणा, ता धी
 फमग्गाए करीयतारा शुद्ध एवरा अपाद्धिम मरणातिथ,
 सलदणा, कुमणा, आगदणा एव अदयारा, पयाना,
 जाणीयरा, नममायगियरा तवडा, त आलाऊ, इहलोका
 मसप्पउग पन्नागाममप्पऊग नीरियाममप्पउग, मरणा
 मप्पउग, काम भागाममप्पऊग, तम्म विग्गामी दुक्ख ॥२०॥

॥ इति ॥

अथ आत्म-शिक्षा सज्जाय लिख्यते ।



(हाल—कर्मन सुंदरे प्राणिया पदशि)

मान कीनेरे मानरी, माने गान गिनाग । ध्यान १
पापोरे धर्मनो, मरने दुर्गति जाय ॥ मा० ॥ १ ॥ जे तर
महिला में पाहोटा, करता भोग विलास, ते तर मरने
माटी धरा, उपर उगा छे घाम ॥ मा० ॥ २ ॥ जे नर रुच
पाधना, शादु कमल पाध, ते नर मरिने माटी धरा,
भाटा पड़े रे दुम्हार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जे नर सुग में बिराजता,
बागुलता सुग पान, ते नर पोटा छे आग में, फाया
काजल समान ॥ मा० ॥ ४ ॥ चाँमठ महम अवेउरी पावक
छिन्नु जी फोड़, ते तर अन्न अरेलढो, चान्यो छ मह
रिद्ध छोड़ ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे नर छत्र धरास्ता, धमर विभवा
जी सार, ते नर पोटा छे काठ में, उपर डागा की दार
॥ मा० ॥ ६ ॥ जे नर टीपक करी पोढ़ता, फूलदा मेव रिझा,
ते नर अग्नि माहे पोढ़िया, चाचा मोरे र कट ॥
मा० ॥ ७ ॥ जादव पति मगिया जी चल गया, जे नर
नरेश, वन कशुबी में, एकलो हययो बाजा मुन्न ॥ मा०
॥ ८ ॥ दोढ़ा दोढ़ा रे चालता, निखता रनेइ फाँन
पोहरे दिहा हुता, छेले दिशे जिनाइ ॥ मा० ॥ ९ ॥ कर्म
महामु जी दुख अडे, बाढ़ां कग्गा र कट ननद नादे

मायना नही न ना हाथ गया रमा मा ॥ १० ॥ गरीब
 लाका न रामना रमा प्रभुना म नाहि रावल रोख्या
 र दूम पद माय र मन माय या ॥ ११ ॥ घर मंदिर
 पूंही रखा मा ॥ पुण्ड्र न पाप कर्म काव कर्म बाधिया,
 भागव एकला नी आर ॥ मा ॥ १२ ॥ राम गिहुणी रे
 ज घड़ी निज निजल नाय आद्रा जानर र कारख, मूढ
 रखा ललचाय ॥ मा ॥ १३ ॥ नायन पुग्नी नी बाण,
 मरणाइ मर भर, काल तिहान ना लगया, नही कोई
 लाय जी घर ॥ मा ॥ १४ ॥ बमण धमनि जी रहर्ग,
 युक्त गया लाल अगार एरम ठमका जा मिट गयो, उठ
 चल्या नी लाहार ॥ मा० ॥ १५ ॥ मिरम पधरणा में
 पहाड़ना, तल फुलल लगाय डरु निन रमदी यणि दूतरा
 कागज खाय ॥ मा० ॥ १६ ॥ तन मराय में बामो करी,
 जीव माधे सुग चैन, शाम नगरा रूचग, बाजन है दिन
 रैन ॥ मा० ॥ १७ ॥ परनालीन पात्रा फिर्या, बुद्ध बणि
 नी दह, जल में पेश सीधा लिया, धूम र कार मु स्नेह,
 मा० ॥ १८ ॥ मानी नर मानी बया, करता नारकि नीर,
 रम जाणि धर्म आदरे, ते तो पुण्यमत जीर, मा० ॥ १९ ॥
 नलामी निर्लामी छ काथरा सिंगपाल, तिहारी प्रतीत
 आंखज्यो, धोख्यो आत जनाल, मा० ॥ २० ॥ सद्गुरु
 सासार टालमि, जोगा मुबुद्ध नरेग, माधु आनक प्रत पाल
 ज्यो, मुगति मुगति मुर थाय, मा० ॥ २१ ॥ कुगुरु दुमार्ग
 बालमि, रमे पनीज्यो त्याहि, दिया धर्म कगयने, मेलमे -

नारकी माहि, मा० ॥२२॥ तिहां कोई आडो नहीं भावसी,
 जी जी जप में निवार, मारने हेलो रे एकलो, छेदन मेदन
 छेद, मा० ॥ २३ ॥ अनंत भूख तृषा सही, शीत ताप
 दु त्व पोंग, धाती करवत सारखी, वेदन कटिन कठोर,
 मा० ॥२४॥ पांच पदवीय चाकी रखा, हिंसा भूठ भदत्त,
 मांम मद्य पर नारना साया दोष अनंत, मा० ॥ २५ ॥
 देव दुदाला जी भायमी, करता लोचन लाल, टेप्या
 जीरगे रे बापमी, मारामि मुटल झाल, मा० ॥ २६ ॥
 हसता कर्मज बाधिया, रोया छुट जी नाहि, सतगुरु कहे रे
 चेतायसी, चेनो चतुर मुनार, मा० ॥ २७ ॥ पददे रहती
 जी धर्मयी, मजति नित भृगार, भावर उतरया जी
 धर्मग, त्याग (तब) पर २ री पखिहार, मा० ॥ २८ ॥
 चिदु दिम हुडी जी धामनी, दीडता हिंदोले झार, पुण्य
 रो मयो पूरा हुबो, त्याग (तब) कही मागे नी झार, मा०
 ॥२९॥ भागे जाचक ओ लगे (सुमामदी हां जी २ कर) भवत
 पडो अमरार, अत्यविण तिथिरे भगटिया, भाणे ईधन बार,
 मा० ॥३०॥ रात्र तेज गिदु कुदुम्यरा, कांसु करो रे अहकार,
 मैलो मडियो छे कागिओं, दिखता नहीं बार, मा० ॥३१॥
 पृथ्वी पाली अयन में, वायु वनस्पति श्रमकाय, इत रवा
 धर्म उपत, दुख दागिट मिटनाय मा० ॥ ३२ ॥ परनागि
 मग परिहगे ज्ञोय तवा दुख दाय, योगि छोटया मम्पति
 निने, मान बोलया मुञ्च बार, मा० ॥३३॥ मुप्या नाया जी
 पापानि, बान बगे निमनो निम महग २ पागरी, गल्लो

मायमा नही, न तो जाय गया मन्त्र ना / गगन
 लाफा न गायना / न पवन न न / गगन गच्छा
 र दृश्य पद / न मन्त्र मन्त्र मा / न माय
 पुष्टी गगन मा, पुष्टी न गगन / न न गगन गगन
 मायम एकन / न न / न गगन
 न पद नि न / न / न न न न न न
 गगन लाना / न न / न न न न न
 मगगन न न न / न न न न न न न न
 लाय न न न / मा / न न न न न न
 चक्ष गगन लाना / न / न न न न न
 चक्षया न न न / न / न न न न न
 पदगगन / न न न / न न न न न
 गगन गगन / न / न न न न न
 नाय माय गुगन नन / न न न न न न
 नन ॥ मा ॥ १७ ॥ न न न / न न न
 ना दृष्ट नन म पद मा / न न न न
 मा ॥ १८ ॥ मानी नन मानी / न न न न न
 नन नाय धम आदर, न ना १९ / न न न
 निलाभा निलाभा छ कायरा गगन न / न न न
 आंखज्यो, द्योत्या आल जेनाल, मा / न न न
 मामार टालमि, नाय गुगुद नगु, मायु थारक नन नन
 ज्यो, मुगति मुगति मुग थाय, मा० ॥२०॥ गुगुद दृमाय
 पालमि, नमे पनीज्यो / पाद, दिमा गगन कगन, मेनमे -

नागकी मांदि, मा० ॥२२॥ निहा कोई आहो नहीं आवमी,
 जी जी तप मे निवार, माग्मे हेतो रे एकलो, छेदन भेदन
 वेद, मा० ॥ २३ ॥ अनत भूत वृषा मही, शीत तार
 दु ख पोर, घग्गी करवत मारगी, वेदन कठिन कटोर,
 मा० ॥२४॥ पाच पच्चास बाकी रघा, दिमा भूट भदल,
 भांम मघ पर नारना लाग्गा दोष अनत, मा० ॥ २५ ॥
 देव दुदाला जी आवमी, कग्ता लोचन लाल, देग्ग्या
 जीरगो रे बापमी, मारमि भुङ्गल भाल, मा० ॥ २६ ॥
 हमता कर्मज बाधिया, रोमा छुटे जी नादि, सतगुरु करे रे
 चेतागणि, चेमो चतुर मुवाण, मा० ॥ २७ ॥ पद्दे रहती
 जी फमली, सचति नित मृगार, आवर उतरया जी
 धर्मग, त्यागे (तब) पर २ री पखिहार, मा० ॥ २८ ॥
 चिहु निम हुडी जी पालनी, हीदता हिडोले स्वाट, पुषप
 रो मचो पुरो हुवो, त्यार (तब) कउदी भागे जी हाट, मा०
 ॥२९॥ आगे जाचक ओ लगे (सुमामदी हो जी २ कर) भवज
 बढो भमरार, अत्यविण तिथिरे प्रगटिया, आणे ईधन बार,
 मा० ॥३०॥ राज तेन रिद्ध हुडुम्बरा, कामु करो रे अहकार,
 मैलो मडियो छै कारिमो, निवृत्ता नहीं बार, मा० ॥३१॥
 पृथ्वी पारि भगन में, वायु वनस्पति त्रमकाय, इण रखा
 धर्म उपजे, दुख दाग्गि मिटनाय मा० ॥ ३२ ॥ परनारी
 सग परिहरो श्रोष तपो दुख टाय, चोरी छोट्या सम्पति
 मिले, मात्र बोन्या मुख थाय, मा० ॥३३॥ कप्या तोडो जी
 पापानि, जान कजो निमनोप, निम मरगे रे पागकी, गलो

श्याम गिरा मन्त्राय का उच्चार्य ।



बागुलगा (पायना) अवेउरी (सिया) पायक (नौका)
 रिद (पन) रिउगा (दूलना) काठ में (धिता की लकड़ी)
 टागा (लकड़ी की भार) थटवी (जगल) दोड़ादोड़ा
 (झकझना) निखंता (दखना) छाह (गरीर की पढ़ि
 छाहा) बाड़ा (निमाला) कण्डा (कठिन, जंतरावर) पांक
 (टेढ़ाई) गुरु (गरीब) गिरुयी (बिग) निरुल्ल (फोकट)
 नोपन (जगावनी गाते हैं वो बाना) परछाई (तुर्र का
 बागा) मेर (टोक) हमदी (जमी) परजाति (भस्म कर) डूई
 पगी (लाल वर्ण) पैरा (घुमकर) धूम २ (धिवात) कारहु
 (बनावटी) नीर (पड़नी) पठियाँ (दिखान) देपदुदाला
 (पैना दड़ा पेट वाला परमापामी) पाच (पांच अद्वत)
 पठिचन (पठिम वपाप) अरुर उतरानी धर्म रा (पूर्व
 भर का दुएव पूर्ण हुआ) अचरित निधिरे प्रगदिया
 (साम गिरा दिन आए धरे) सेन (दुक्न) बादिमो
 (रणार्त्ता या मूढ़) रिद्धना (विगदता) मुकदल (देखवालों
 का) ।

दण्डन, (गुप्ता) देखा गुहरी दिना दण्ड
दण्डन ॥ ६ ॥

४०—बदा ई रे बेना दिना यधि जनन, बदा ई रे बेना
दिना गग गलन, बदा ई रे बेना दिना गून
दण्डन, बदा ई रे बेना दिना दण्ड दण्डन ॥ ७ ॥

४०—बोध गुहरी दिना यधि जनन, बिना गुहरी
दिना गग गलन, निग गुहरी दिना गून दण्डन,
गाग गुहरी दिना दण्ड दण्डन ॥ ८ ॥

४०—दण्डा र जना दिना दण्ड दण्डा, देखा र जना
दिना दण्ड माणा, देखा र जना दिना दण्ड
दण्डा, देखा र बेना दिना दण्ड दण्डा ॥ ९ ॥

४० देखा गुहरी दिना दण्ड दण्डा, देखा गुहरी दिना
दण्ड दण्डा देखा गुहरी दिना दण्ड दण्डा,
देखा गुहरी दिना दण्ड दण्डा ॥ १० ॥

४०—बदा ई रे बेना दिना दण्ड दण्डा बदा ई रे बेना
दिना दण्ड दण्डा बदा ई रे बेना दिना दण्ड
दण्डा बदा ई रे बेना दिना दण्ड दण्डा ॥ ११ ॥

४०—दण्डा गुहरी दिना दण्ड दण्डा दिना दण्डा दिना
दण्ड दण्डा दण्डा गुहरी दिना दण्ड दण्डा
दण्डा गुहरी दिना दण्ड दण्डा ॥ १२ ॥

अथ श्री सुगुरु स्तवन लिख्यते ।

वे गुरु मरे उर बसो, जे मनलनिधि ज्ञान, आप तीरे
 परतारता, छेमे श्री मुनिराज ॥ वे गु० ॥ १ ॥ मोह महा
 रिपु (पैरी) जीत के, छोड़े मय घरबार, होय मुनीश्वर बन मसे
 आत्म शुद्ध विचार ॥ वे गु० ॥ २ ॥ राग उरग धपु
 बिल पया, भोग भुजग गमान, कजलि नरु ममारे, सह
 छाड्यो हम जाय ॥ वे गु० ॥ ३ ॥ पच महावृत आदरे,
 पाबु समिति समेत, तीन गुणि गोपे मद, अजर अमर पद
 हेत ॥ वे गु० ॥ ४ ॥ धरम धरे दश लक्षणों माने भावन
 सार, जीने परिमह धीम दाह, चारित्र रत्न भटार ॥ वे
 गु० ॥ ५ ॥ रत्न त्रयानिधि उरधर, अरु निग्रय त्रिकाल,
 जीने काम पिशाच का, म्यामी परम दयाल ॥ वे गु०
 ॥ ६ ॥ श्रीमन् षट्पु रवि तनसु छके सरजर नीर, शल
 जिगर मुनि तप तप, टाचे नन गरीर ॥ वे गु० ॥ ७ ॥
 गवम रखी टगियामसी, बगम नलधर धार, सहस्रल वमे
 तप तपे, बाब भभागाय ॥ वे गु० ॥ ८ ॥ शीत पद
 पि (बन्दर) मर गले, टाचे महु पनराय, धार तरागिनी
 तट, टाड़े प्यान लगाय ॥ वे गु० ॥ ९ ॥ इन विष
 यर तप करे, तीनों काल मन्दा, राग गय महुज स्तब्ध
 तनसु मनत निवार ॥ वे गु० ॥ १० ॥ रम गदल मे
 दाता कामा मेन विद्राय, मरुगनी भूमि मे मो

अथ उपदेशी ६८ कला निवृत्त ।

दाता ॥ निमग्न दिया एना उपदेश, ज दोह साखना
 येही लेत, के दन। मात्र दिन राखजो, म-उरु अ-रमी
 धरला जी कम, पुडावे आण किया परमर, आठ कम्मा
 ने दो मुम्हे खन, माघरणो शुद्ध आदगे, पच महारुव
 मेरु नमान क, जो ए पताच्या थी बदमान, मार्ग लीजो
 ध धारो, मीठी थ घोलनो अनून बाण, माबल केविया
 गु निर्माण क ॥ चेव हो चेव हो मनरी ॥ १ ॥ पुणवरे
 जाने भिन्या सोने माघ, गालि गुणवा तू मत कर प्रमाद,
 रहन करी मुम्हे थदजो, उत्तम कुल मानव भरलाघ,
 सागुरु दवे छे, मगले नी माण क, भिग २ भारन भापिया,
 सपलो ही कपो करे, कांई मरि जीन, विणरे सो सठि छे
 मनगत नीवके, काइक हिरण में राखनो, धम (सोगन)
 यत सकवि माफक धारके ॥ चे० ॥ २ ॥ साधु तो कहे
 परउपकार वालो, पतापदे व तव सार के, धारि प्रकट
 य पगवली नेत्र दोय उधाड़ी ने जेय, सारली उत्पत्त
 य परे होयके, शानि देवा, इमड़ी कही, विणमें मत जाणें
 ल भर भूड, प्राण पराया तू मत सूटके, जो सुख चहारे
 र जीवन, विण २ आउछा जाने छे सूट, विण कने तू
 न कर जारसी सूटके ॥ चे० ॥ ३ ॥ गुणम माए
 ने नी सत, आदि अनादि रूपो अनन, मव २ मांदि
 नको, नर धात्रि उलगने आय, दुष्टजो मानव नो भव

पाय, ऊपर बीच कुल माँहें उपनो, सूत्र माँहें चाली पय।
 पात, थो म्हासो चप ने आ म्हागी मात के, मोद माया
 माँदी कम रद्धा, माड मेन्यो, पणो राम ने द्वेप, लारली
 उत्तरा इग प/ दस के ॥ च० ॥ ४ ॥ नर ने नारी नो
 होरे मनाम, भोगरे ते ममार ना भोग, गर्भवती रहे का
 मिनी, भिटा री भावनी, पत्र माय, तिण जायगा माँ
 उपना आवर, माफइ शगर रयो घणो, नीचरे मस्तक,
 उगानी पाय, जाँची कने बली गोडा समाय के, नेतर कने
 रही मुडिया, आयरे उपनो उदर मक्कार, सुत्रने रुधिर नो
 निरावे आगर, अर २ क/ रश मर्गी अगार, मानदमर
 अहिले मर हारक ॥ च० ॥ ५ ॥ अगुन जायगा में उपनो
 जीव जायगा नर मामा तणी निर चमचेइ निम निरियो
 रसो, माना न छुधा, न पटा न भूय, निम दिन मागर
 ते पणो दूर के मूत्र आगग में कया, भुतम्कय पदि
 सड़ माँहि निचोड़, मुइ मामगी, माउ तीन थोड़, अगनि
 वरय कर आकरी, चाँप न्व न ता मफल शरीर, तिणमु भी
 अधिक छे नरक में पीड, भगवन भाप गया महारार के
 ॥ च० ॥ ६ ॥ सो जाया टावर थोड़े जी पाट, थोड़
 थोड़े नाभियो हाट क, आठगुणा वेदना गर्भ में, थोड़
 गुणी वेदना जमना जाग, अगु अनरणी में सोनी काँडेवी
 तांग, जम यइ मोगे धरा, बलरा हुरो जोरन पय
 पाय, जम तया जायगा मन जायरे धृगपदा, शूग आवे
 नरी मोट रयो नू रयणी र रूप गम घमा चनुगई ने

धूप, मरन तू जामि अन्ध कृप ॥ चे० ॥ ७ ॥ उजल
 राखता आपसी देह, किंति मात्र जो लागली रोदके,
 मर दे भाटक नाशना, मेलगी तोने तहीं पुढारति देह,
 सादरे हू तो परी ने स्नह, पाटिये बैठ पंडिकरे अरुमण
 नार तू कर रे स्नान, लाग गयो तारे त्रार्त ध्यान, चोपा
 ने चरन रचतो, खारतो खोपगने गुरफ दसर, देही तो
 होय जामी बलबल राग, हम जायि समता रम चाख के,
 ॥ चे० ८ ॥ पाला रे ममर हाता मारा केम, निरा दिन
 परतो नरा २ बैठक, छेलाइ कृतो परी निरुतो चालतो
 आपसी पाय, तीन समाशा ने जोरतो राग क, भाग
 आगिमी तू गहतो, घाल के कांड महाने रे पृष्ठ, ताप
 देन मरोदता मृद, मरमाइ नहीं मायतो चायतो बिडाने
 गुगतो पूल, धर्म बिन धागे किम होमि मूल, परमपने
 तू किम गया भूल ॥ चे० ॥ ९ ॥ लप्या में पड़ा ने
 कना में मोती, लाग गही थारे अगमग ज्योति,
 उचो लपेटो रे दापनो, उपरपी ता देवे पला
 पय बाकी मी, गर्दन, आगिपों अथ, आंट ने पृष्ठ,
 दिये परी निर्गतो चालतो पारवी नार, मर २ माहि
 पतो होमी ममार के, अन्य उरा पटी पानमी, पारवी
 पारी ये सोरोली रे पोट, नेदीय नरक बमार में मोट,
 हात एक दिन कर जायसी पोट, धनी ने पद अने पारी
 ने पोट के ॥ चे० ॥ १० ॥ मोना ग प्याना ने रता ग
 दान मुहुंनि निहारे चरन दान, मोत्रन नव नो नाव

रा, गन्धोत्तर पाणी निहा टार, मनमारया बली पल वा
 पार, बमत मान निरा तुरत तयार फ, तुमिच नरी किणी
 पातरी मुख गढा भोगरीया भरपूर, जार्ग देसता २ हाई
 धूर, तेठ सेनापति ने उभगत यडा २ भूपत राणा रार,
 निके पादल नेन गया मिललायक ॥ चे० ॥ ११ ॥ साना
 रा सिद्धामन द्विजला स्याट विग्यायली गेले छे, चारस
 भाग, गिग्रा गलीचा न बिरमार्ग ओट, ज्या नरा न
 फाल कर गया ओट, पद्मता जम पारे धूने थर दर इर,
 तुम्हे लीचो दया घम नी ओट, अगलमारतो यदन तल,
 नाडी मिली पाण मादन यल चालती चाले जाणें गनगन
 गेल के, भर्तार चोडे मिली मामिना, (स्त्री) कचन बर्ण
 हुती चारी देह, घण माहे यल चल होय गइ रोड, पातम
 पदमण ने दे गयो छेह, ताहार हुतो, पयाँ रे स्नेह, किन्तु
 फारमो जोवन एह के ॥ चे० ॥ १२ ॥ रमणी पिय राव
 रही रे ममार, नित नयला करता भृंगार के, इन्दर तली
 जाणें अपसग, दाम्या उभी गहती बे कर जोड, एर पुल
 पता दम आर दाँड के, मेन रैठी रेयती सुदरी, बेग बहु
 ने कुडुम्भ परिवार, लोपता नहीं काई तहेनी कारके, पामिना
 भुग ससार, मूषती फूल ने चारती पान, कथ ने चाहली,
 जीव समान के, बिरह तो रमणी आये नहीं, रहती सदाई
 उबा, लील बिलास, एरु वरम जायती जायती मास, तिख
 लुगाई नो निकल गयो सान, जाय मत्ताण में कर दियो
 चाम, मिल गई मागी उपर ऊगा न्हे पाम, इम जागी धम्म

करा, मन हुलाम, लू टल चारे थारा गर्मावाम के ॥ चे०
 ॥ १३ ॥ भारी कम्मा केई होरे जीव, जहाँ नरक जायण
 तपी दिधी छे नीर के, भागुच अहि नाख, एहवा मुखे
 नहीं मगरव नो नाम साधु रे उपर दुष्ट परिणाम के, निन
 भारे उपर तप तो रहे, कुटा कलक दे पाले छे भूठ, मारण
 ने उपास्ता घूट के, चार बोल बले चालिया, तीन से
 तरेयठ चालिया मत, पाहुणों निरमी तू चार ही गत क ॥
 चे० ॥ १४ ॥ पग्नारी मू हुता थरा प्रेम, खोटा ये कर
 लिया धम ने नेम के, परपी रे दाय आर नहीं, रहनी
 पथी पारी छोटी रे, लिष्ट काहू लपटी ने, अढ़ा रे भिट
 अहिनाए, खोय इण लाटना पर पूठ, पच न देवे जी
 मारु, भूपत टट ले काटे जी नाक, लाका माहे फिट २
 हुवे, मान रे मान तू मनुगुरु मीम, नहीं तो पाममी जमनी
 भीक क ॥ चे० १५ ॥ जनकरी बेटी ने ले गयो लक,
 गवण गयो हुनो पणो बक के, तिको लछमण हाथ मारयो
 गयो, दम तो हुता जेह ने नीश, बैरने हुना थराय तो
 रीस के, पदमोत्तर टोपदा ने ले गयो, तिण विख नाधिया
 माठाजी रम, कुए गमार दीनी तेहरि शर्म, पदमोत्तर
 पापी रो निकल भयो भर्म, हम जाणी शील में जाण जो धर्म
 के ॥ चे० ॥ १६ ॥ मेगुरया ने मोघोरूप, मणगुरया गयो
 अघ २२ के, बन पाव जणा हुमा कोदिया, चार जहाँ दुदा
 पठा, पढ़े उएट बुटा नाम जो हुमा घजा भट, जीमती
 पानिमा नीलि अमण्ड फ, उन भाप ने रह नथा, रउमति

नामे हुंती जी नार, माली अर्जुन तेहनो भर्तार के, जघ री जाय
 गा में गया निजरां दगता मोगरी नार छद्द जणा ने नाखिया
 मार सातु जया रो होवो सहाय के, कुमत गया कई नावरी
 परनारी रा मोटो जी पाप, जीव रो जोखो ने सदे मतार,
 लाने गखा बली माय ने पाप, भी बिादर भुग मापिया
 थाप के ॥ चे० ॥ १७ ॥ एहरी सामल मद्गुग्याण कइ
 धेतिया चतुर मुनाण क, परनारी धुर पगहिर, भारक
 ना वन लीना जी पार, साचि पामिया समकित नार क,
 पडिकमखा ने पोरा परे, शुद्धि पालता विनार भाव,
 निश्चय लेमी देन विमाण, सुगे २ पद्मचमी ते निग्याव,
 पुण्यवन चीरा रा एही महनाण के, ॥ चे० ॥ १८ ॥ कैंक
 माघांग के गुरा ग्राम, रिख रे तो है एक दशन मु
 काम क, कइक नपारा सुख सदा, कदा जा नहीं मकरी
 भाव, रिख भावना रहे छे मन रे माय के, तो पिय गगन
 मर धणी, कइक चउदे प्रहार रो दर छे दान, जह प्ररुपिया
 भी पदमान क, शालमद्र ने समाल जो, सुख रिपाक में
 घालियो पाट, इमर सुशादु रे पुण्य ए भाट के ॥ चे०
 ॥ १९ ॥ अधिर जाण जा ए ममार, अधिर जाण जो,
 देह विकार के, अधिर जावन जाय छे अधिर जाण जा
 सद्दु परिवार, इम जाणि लाहो लीनो जी लार, नु पामका
 मय तयो पार, टीनिय दान ने टाल जो मान, राखिय,
 मय ने प्याना प्यान, रिफदा चांगे ही पगिहग, तरम्बा
 कर दाननो, काय ना पाम रिग मु पामनो, नील विनाम

गुद पर्या तुम्हें होय रहो दार के ॥ वे० ॥ २० ॥ धर्म
 प्रमारे प्राये देनलोऊ ज्योतों मिले छे सपला ही
 शोकव, रत्न अद्विष्ट पर आगयो, नाटव पद रसा रे
 स्वार, गुड मोहारे मागे मन जगीम, सषा धेही धेही
 ज्यो परे, जटे नहीं रोग ने गोक, जोदा गये देखियां आवे
 छे भाग, पल मागर से आउगो, चौमट मयगो छे तिहा
 गोरी, साग रही जहां जगमग ज्योती, धर्ये छे पिय अधिन
 उपाव ५ ॥ वे० ॥ २१ ॥ देवता ना पिय कारमां गुण,
 ज्यो पले साग रही छे भूर, आशासन आगो लगी
 शरीर भाप नू हो ने जुगल, बेगी मिल जाये तीन ॥
 हुन के, शास्त्र गुन साक्षा पर्या पड़ेही गन रे उपर
 आग, गगनाच सुमानदी गान, रिर नहीं तिहा आग
 गग, उपर ताड छे भाने तिहाय के ॥ वे० ॥ २२ ॥
 अहिनि तिहा ने गदा प्याय, बेकर ओरी शीश नमाय
 के, उगप्यवन में जी जाय यो, सीमों अष्यवन सीमों
 छी जोर, पुर गाथा पहिले पद होर, मकल करि जहां
 निदिहिसा, अनादि ज्ञान स मिट गदा भोद, जेमी नहीं
 काह सीडी रोद सोक सीमा रे उपरे, सीम गदा छे गुर्ता
 रे भाद, ज्ञाने प्यादा उद्य आपना आव, निर नहीं
 भाद ममा रे भाद के ॥ वे० ॥ २३ ॥ उपेक्षु चौरीसी
 करी छे दन, भादनदा लगे रागो देन, गुद उपेक्षी
 दने छे दने त नगी दन दखो रे देन, जो निर
 दने दख रे निर रे भाद भाद का अवन गदव

अथ धन्नाजी री सज्जाय लिख्यते ।



धन्नाजी गिख मन चितने, तप करवां तुटी हम तपी
 फायके ॥ भी बीर निनदर्जी न पूछने, आजा लेने सधारे
 दियो ठाय के ॥ १ ॥ धन करपी हो धनराज री ॥ ए आंकणो
 ग्रह उटीने सांघा भी बोरने, श्रीगुरु आजा दिवी करमाय के ॥
 निमलगिरी, धेवगो सांघे, चान्वा समसथ साध समाय के
 ॥ धन० ॥ २ ॥ ठाया सधारे एक पासनो, धेवर आया
 प्रभुजी रे पास के ॥ भड उपगरण स्वामी सामलो, गौतम
 पूछे बे कर जोड़ के ॥ धन करपी हो धनराज री, धन
 करपी हो धनीराज री ॥ ३ ॥ तप तपिया मुनिवर पट्ट
 आरग, कदो स्वामी बामो कदां जाय लीध क ॥ सागर
 तेरीमार (३३) आउरन, नर महीना में सारथ मिद्ध सीध
 के ॥ ध० ॥ ४ ॥ खेत महाविदेह मादे सीनमी, विस्वार नरमा
 भग रे माय के ॥ निरमुख गिर पत्नी लही, आमकरणनी
 मुनि गुरु गायक ॥ ध० ॥ ५ ॥ सम्बत् अठारे सो
 गुरुसटे, बेमाख बट पट्ट रे माय के ॥ रिमलपुर में गुरु
 गार्दिया, पूज्य रायचंदजी रे अताद के ॥ ध० ॥ ६ ॥
 भोक्षोजी श्मको में कदो, तो मुक्त भिच्छामि दुकद होय
 के ॥ बुद्धि माठ गुरु गार्दिया खर रे अनुमारे जोड़ के
 ॥ ध० ॥ ७ ॥

॥ हाउ धन्नाजी री सज्जाय सम्पूर्ण ॥

स्तवन ।



आरम्भ करतो रे जीव शके नही, धन मिल वृष्णा
 अपार, धान करे देखे पण्डित जीव री, करे मद मामना
 आहार, चार प्रकार जीव चाव नरक में ॥ १ ॥ माया कपण
 शुद्धमाया कर, बाल झूटाची बेख, हृदय तोला हृदय माण
 कर, पण तिर्यक गतना सनाण, चार प्रकारे जीव चाव तिर्यक
 में ॥ २ ॥ भद्रिक प्रणाम मगल स्मरण थी, चिनयतया शुभ
 होय, दया भाव तो दिल में देखे घणा, मन्मर नहीं मन मोष,
 चार प्रकारे जीव चाव मनुष्य म ॥ ३ ॥ मराण मयम सराण
 ठप कर, श्रावक रा व्रत बार, बाल तपस्वी अकाम निर्बरा,
 तिर्यसु लहे सुर अतार, चार प्रकारे जीव जाने देवता ॥ ४ ॥
 ज्ञान सु जाणेर जीव अनीन ने, समकित, श्रद्धादि मोंठ,
 मयर रोके नगा कर्म आसता, तपसु पूर्ण कर्म स्वपाय, चार
 प्रकारे जीव जाने मोक्ष म ॥ ५ ॥

न्हालदे नी देशी ।



दश पन्ध्याये जीयहो जी, काड पामे मुय अपार,
 वगता एर नय फारमी जी २, मो परम नरक निवार, तप
 मना ननी जगत में जी, मुय तरा दातार ॥ त० ॥ १ ॥
 बिनु पोग्मी वर्ष महमनी नी, काड माय पोरनी दज हनार,
 पुरीमद सच एक वर्षनी जी, एकामये दश लख धार ॥ त०
 ॥ २ ॥ नीवी तोडे कोड दग्मने जी, काड दश कोड एकल
 टाट, मो कोड एकल पन देहनी, आरील महन कोड जाण
 ॥ ३ ॥ महम दश कोड उपराम में जी, राई छटनये तप
 पार, लख कोनी वर्ष तपाहीये नी, अठस कोटी दश लख
 गर ॥ ४ ॥ कोन कोनी बपनो जी, राई दशम मम्म करे,
 कम एनिराम कटे तप पानिये नी, पामे महु गिर गर्म
 ॥ ५ ॥ ननि ॥

ऋषभदेवजी का स्तवन ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुण जिनकर त्रिभुवन घणीनी दाम तर्नी अद्दाम,
 तुम आगल चालर परजी म ठा कर विन्वान ॥ हो जिन जी
 मुक्त पापी न जी तार ॥ १ ॥ तुम ता करणा रम भग
 जी तुम मर का दिनकार, मरक जाणी आपना जी
 भर मागर सु तार ॥ हा वि० ॥ २ ॥ नीर तुला दध में
 लिया जी, बाण्या मृगा जी बाण कपट करी पर घन हाण
 जी मय्या विषय म्वाद ॥ हा वि० ॥ ३ ॥ मैं अरगुण की
 ओरही जी गुण ता नहीं। लपनेग, परगुन दूसी तरी
 मरनी हिम समार तर्नीज ॥ हो जी० ॥ ४ ॥ भार ॥
 लानरी चीकम लिया रई राइ, मीन धुवन में कोर नहीं
 ना ना आर मुक्त नाइ ॥ हो वि० ॥ ५ ॥ छिउ पगवा
 अन्ननिगावा जा ना रहु जगनाथ, कुमान तणी काली
 कर नी नाइ। तजम माथ ॥ हा वि० ॥ ६ ॥ इमन दुक्त
 कलगी नी दारी गन मन मुक्त, बांही करनी मायी
 जा मननाउ शु तुम ॥ हा वि० ॥ ७ ॥ पुत्र निता मुक्त
 शर्लिया जी जाणु मनु शाय उधे तगर मांडीरा जी
 लीहा वनरु शय ॥ हो वि० ॥ ८ ॥ दिन बाण्या विर
 माग्या जी ककर कम यथाय, आनंजन मिट नहीं
 रई, कैंव कन उपार ॥ हा वि० ॥ ९ ॥ काजन ची वध
 मरगा जा, मग मर शयम गुन में कण तरंग जी.

ममालोया नहीं नाम ॥ हो त्रि ॥ १० ॥ मुद्र ने ठगवा
 भगी जी, कर अनेक प्रपच, वृद्ध रुपट बहु केलबुजी
 पापदरा कर मच ॥ हो त्रि ॥ ११ ॥ मन चचल ना
 रहि सके जी राचे ममगी मुख्य, काम विटमरा मु कट जी
 नमो दुल्ल रुप ॥ हो त्रि० ॥ १२ ॥ किमा कहु गुण मायग
 जी, किमा कहु अपराध, जीम जीम ममालु हीय जी,
 तीम तीम बाधे विरुदा ॥ हो त्रि० ॥ १३ ॥ गीरवा
 (माग) जे नहीं लेखवे जी, जुगया मेवकनी जी बान, नीच
 तर पय मदग जी, चर न टाल जान ॥ हो० ॥ १४ ॥
 जुगया तों विर तुम्हायरो जी, नाम धराऊ छु दाम, कृपा
 री ममाल जो जी, पूगे मुक्त मन आम ॥ हो० त्रि०
 ॥ १५ ॥ पापी जाली मुक्त मणी जी, मर मुक्तो विमार,
 विल एनाहन आदरों जी, ईश्वर न तपनार ॥ हो० त्रि
 ॥ १६ ॥ उच्चम गुणकारी होने जी स्वार्थ विना हे सुनाय,
 विमान मीचें मरारु जी, मेह न मागे दाय ॥ हो त्रि०
 ॥ १७ ॥ तुम ने शू कहिये पयो जी, तुम सर पार्ता जी
 जाण, मुत्र ने पाजो माहेवा जी, अवोभव ताहरी आय ॥
 हो० त्रि ॥ १८ ॥ तुम उपकारी गुणनिलो जी, तु मेवग प्रति-
 पाल, तु ममरय सुम्भ धुरवा जी, करो भ्दारी ममाल ॥ हो
 त्रि० ॥ १९ ॥ नायिगाय कुल बदलो जी, मरु देवी नो जी
 नद, हे त्रिन हार निवात्र जो जी, दीजो पगमानद ॥
 हो त्रिनजी मुक्त पापी ने जी तार ॥ २० ॥ सम्पूर्णम् ॥

न्हालटे की देगी ।

ऊपर पुराणा पड गयानी, काई नृण्य लागी बध,
 मय मध खुलख लगी जी साई तउ नटीम मति मद,
 अर धर हूटा चेतन ममभिषेचा ॥ १ ॥ भरोये जानी
 लगीनी काइ गरी आडी भीति, मूल निर डिगमिग क
 जी काई भइ पुराणी रीत ॥ अ० ॥ २ ॥ दमन (दाव)
 सुभट नामीगयानी, काई स्वाइनो लोक (काला केम)
 गयो दूर मिसुर भरहर घुनतीनी, काई आई नदी पुर ॥
 अ० ॥ ३ ॥ बेगडी पण ठहरे नहीं जी, काई नहीं काई
 रीश्रपाल क्यु मृता तु नींद में जी, काई अर तो सुग
 ममाल ॥ अ० ॥ ४ ॥ अर करणा है सो रीत्रिये जी, का
 उगा है सो देह, लणा है मा लीत्रियेनी, काई रुहणा है
 मा कह ॥ अ० ५ ॥ लाप लगी चहु फेर गु जी, का
 मिल रही भालो भाल, मुगिराम रुई सहु कान्नों नी,
 काई इण धर म उहु माल ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥

षट् द्रव्यनी सज्जाय ।

षट् द्रव्य ज्यामैकहो भिन्न भिन्न, आगम सुखत पद्याय,
 पचास्तीकाया नर पदारथ, पाच मान्या ग्यान ॥ १ ॥
 चाग्नि तेरा कसा चिनर, ग्यान दर्जन प्रधान, जे शास्त्र
 नित मुखे भरियन आण सुधमन ध्यान ॥ २ ॥ घौरीन
 तीर्थकर लाक मांही, तरण तारण जहान, नव पाम नव
 प्रतिपाम देवा चारे धन्यनि जाण ॥ ३ ॥ बलदेव नव
 मप हुना, नेमठ पणा गुणा री राण, जो शास्त्र नित
 मुख भरियण, आण सुधमन ध्यान, प्यार देशना दिवी
 चिनर, कियो पर उपकार ॥ ४ ॥ पांच अनुमत तीख
 गुणमत प्यार शिछा धार, पाच सरर जिनेश भाख्या, दया
 धर्म प्रधान ॥ जो० ॥ ५ ॥ और कहालग कर बसन,
 तीन लोक प्रमाण, सुखत पाप रिनास जाये, पाप पद
 निराण ॥ ६ ॥ देव विमालिक माहे, पदवी पदी पच प्रधान,
 जे शास्त्र नित मुख भरियन, आण सुधमन ध्यान ॥ ७ ॥

॥ १३ ॥

श्री मुनि सुव्रतजी का स्तवन ।

(चेतरे चेतरे मानवी ऽ देशी)

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीनदयाल देवातणा देवों,
तारण-तरण प्रभु तो मणी, ऊज्ज्वल गित समरू निरमर
के, श्री मुनि सुव्रत साहिबा ॥ टेक ॥ १ ॥

हू अपराधी अनादि को, जनमें जनम गुना किया
भरपुर के, लूटिया प्राण छ कायना, सेविया पाप अठारे
कर के ॥ श्री मुनि० ॥ २ ॥ पुरब अमुभ कर्तव्यता, तेहन
प्रभु तुम न बीचार के, अधम उधारण रिहद छे, सरण
आपो अर किन्हीये सार के ॥ श्री मुनि० ॥ ३ ॥ सिंचित
पुन्य प्रभाव थी, इण भर ओलरियो निन घर्म सार के,
निरतू नरफ निगोद थी, एरो अनुग्रह करो परिमल के ॥
श्री मुनि० ॥ ४ ॥ साध पयो नहीं सप्रयो, आपक प्रत न
किया अगिहार के, आदर्षा तो न अराधिया, तेह थी
रुलियो हू अनत समार के ॥ श्री मुनि० ॥ ५ ॥ अब
समबित प्रत आदर्षा, तदपि अराधिक उतरू पार के,
जनम जीवव सफलो हुने, इण परगिनतु पार हजार के ॥
श्री मुनि० ॥ ६ ॥ 'सुमित' नराधिय तुम पिता, पा घन
श्री 'पद्मावती' माय के, नमु सुत गिरधन विलक तूं, पंदत
'रिनष चन्द' भीम नमाय के ॥ श्री मुनि० ॥ इति ॥

हितशिखा ।

(१) देव अरिहत, गुरु निग्रय और रेयली पम्प्यो दया धम, यह तीनों धर्म के व्यवहारिक तत्व हैं ।

(२) देव आना, गुरुआन और शुद्ध उपयोग धम, यह तीनों धम के निश्चयिक तत्व हैं ।

(३) सम्मर पान, सम्मर दर्शय और सम्मर चारित्र यह तीनों (मिलना सोही) मुक्ति माग हैं ।

(४) धर्मना चार प्रकार— दान, शील, ता और भाव ।

(५) चमा अमृत हैं, उद्यम मित्र हैं (उपन व दलिद्र नाशे हैं) मत्स्य और नील मरयो हैं (निग हैं) और मतोप मुरा हैं ।

(६) सन्मग परम लाम, सन्मग दन वन, विचार परम ज्ञान, सम परम मुक्त ।

(७) श्रोष जहर है, मान (धर्मनन, गुरु (वेदा) है, माया (दगो) भय (दर) है । दन (उग्या और लोभ) दु छ हैं ।

(८) याद सगिर दन दन दाना है, कृत्य (किया हुआ) दन दन दाना (देव)

॥ गगनं कथयामि मम निजं लक्ष्मी प्रसर
नमो भक्त्यै तस्मात्तु ते नमः ॥ १ ॥

इत आर प्राग नाम ता वस अनीति मु
नम न ना कला ना न न दली कुटुम्ब
परा रा रा । रा म रा रा पला आयो
पकल १५ सयरा रा रा कम आप ही पकला मागे
न ना भ मर म्या। यया ह ।

१. 'मरण' शब्द का अर्थ 'मृत्यु' होता है।
२. 'मरण' शब्द का अर्थ 'मृत्यु' होता है।

() समान सद्गुणमाली । पाला धर्म उपर
निराश प्रत्यक्षकर्मणः कर्म नश आश्रयता कर्म का रोको ।

१) कथा २) गाय ३) घण्टा (कमती कंगे
यान नाता ४) द्रव्यान र्म। यान यश कंग, धर्म ध्यान शुवन
ध्यान ध्याता ।

(१४) मुझ दुःख, चढ़ती, पढ़ती, लाभ, अलाभ, जावणा, मरणा, ए सब कम मे प्राप्त होये है, इस चारन धियवान हए मात्र न करे ।

(१४) (प्रश्न) भूलगा क्या ? (उत्तर) अपना किया हुआ उपकार को (आप किसी पर उपकार किया हो तो उसको याद मन कर द्यो जाय्यो कि कोई निमत

कारण मु उपकार होयें का था (यस) और धनरा बदा' (उत्तर) दू रा (कोई दू रा दें तो इसी आप के ग्हाते पाव कम को उदो ई कोई मय में मैं दू रा दिया है किसी का दोष नहीं, बाँप्या कर्म मोग्या छूटगी (कटमी) सम भाव मु महन कर) ।

दुहा ।

मुख दिया मुन होन है, दू रा दिया दू रा होय ।
आप हयें न और वो, आपण हयें न बोय ॥

(१६) मीठो बोलें, (प्रीतिकारी बचन) विनय करे, (नम्रता रखे) सम्पद रखे, पराया औगुण नहीं बोलें, दान दय, सामलेरी मग्जी अराधे, (याने सामलेरी मरती भाषिक चले) सामलेरी अग चष्टा जायें, ए अमुन्य बरी करण मत्र है ।

(१७) पाप की निन्दा करना, परंतु पापी की निन्दा नहीं करना, स्वामा की निन्दा करना, परन्तु परात्मा की निन्दा नहीं करना ।

(१८) "मेरा सो मन्धा" हम हठ को छोड़ (न्याय कर) "सन्धा सो मेरा" हम न्याय को स्वीकार कर ।

(१९) आरतध्यान, रुद्रध्यान, छोड़, परायेरा ओ गद्य टाक, स्वामारा ओगण काठ, आपरा ओगण पराये डार मत्र दान ।

शान्ति । शान्ति ॥ शान्ति ॥ ॥

मेवमने, मेवमने ।

गानम बोने मही, मरावीर के पवन में सदेह धड्डु नहीं ॥

बैसा लिखा हुआ देख्या, राज्या या मुण्या, बैसा
ही अन्य बुद्धि के अनुभार लिखा है, तत्त्वकेपलीगम्य,
अपरा, ए, कानो, माप्र, आच्छो, अधिको, आगो, पीछो,
अशुद्ध पमो निम्नो होय तेनो मिच्छामि दुष्टद ॥

इति प्रथम भाग समाप्त ॥

एव प्यरहा निम्न लिखित पते से करें—

टी जैन नेशनल मेमिनरी (स्कूल),

मरोटिया की गुवाड़,

बीकानेर (राजस्थान)

The Jain National Seminary (School),

Mohalla Marollian,

BIKANER,

(Rajpura 2)

आहुतदभूतान् भीमान् पण्डितान् जीवागमिनी इव क
श्री केवल जीवानन्द मय, श्रीकाय म
पण्डिता आकाशदत्ताश्च साक्षी
मन्त्राः क मन्त्र इव
मन्त्रिन ।

